रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

वर्ष 6 अंक 4, अप्रैल 2022

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में संवर्धन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा – 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

आशा है आप सभी होली का त्यौहार मनाकर परीक्षा की तैयारी कर रहे होंगे. इन दिनों आपके स्कूलों में सौ दिवसीय पठन अभियान भी चल रहा होगा. हमारे शिक्षक साथी इस बात से सहमत ही होंगे कि एक बार यदि बच्चों को समझ के साथ ठीक से पढ़ना आ गया तो बाकी चीजें अपने आप धीरे-धीरे आ सकती है.

हमारी किलोल पत्रिका बच्चों में रूचि विकसित करने एवं उन्हें अपरिचित पाठों को पढ़ सकने में दक्ष बनाने में सहयोग करती हैं. हमारे संकुल समन्वयक साथी जब भी किसी शाला में अकादमिक निरीक्षण के लिए जाएं तो किलोल पत्रिका की प्रतियाँ अपने पास रख सकते हैं. उन्हें वे बच्चों को देते हुए उनके पढ़ने के कौशल की जांच आसानी से कर सकते हैं.

कई बार पाठ्य-पुस्तक से पढ़ने की जांच करते समय बच्चे अक्सर बार-बार उस पाठ को सुन लेने की वजह से पाठ में उपयोग में लाए गए वाक्य उन्हें कंठस्थ हो जाते हैं. ऐसे में हम जब उन्हें किसी पाठ को पढ़ने को कहते हैं तो वह वास्तव में पढ़ने के बदले रटकर सुना रहे होते हैं और हम इस भ्रम में रहते हैं कि बच्चा अच्छे से बिना अटके पढ़ रहा है.

मुझे पूरी आशा है कि यदि किलोल पत्रिका का नियमित उपयोग हमारे संकुलों में किया जाए तो हर बच्चे को समय पर पढ़ना आने लगेगा.

आपका
आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक आलोक शुक्ला.

अनुक्रमणिका

पापा की यादें 7

समय की महिमा 9

आस्था की बैग 11

शेर और बंदर की दोस्ती 13

रुक आती हूँ 15

दुष्ट कोरोना अब तूँ सुन 16

टोपी 18

अधूरी कहानी पूरी करो 20

गाँव का मेला 20

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 21

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 22

चार भाइयों की कहानी 22

हृदय की झंकार सुन 23

मैडम मैरी पियरे क्यूरी 25

सुब्रमण्यन चंद्रशेखर 27

सशक्त माँ, सशक्त विश्व 30

रंग बिरंगी होली आयी 34

छोटी सी जिंदगी 36

गुलाब और काँटें 37

भारतीय भाषाएं अनमोल रत्न 38

नारी शक्ति 41

गृहणी 42

अमीर और गरीब की परिभाषा 43

नारी महिमा 45
बेटी........ 47
जिनगी के जे पाठ पढ़ाथे........ 48
मुक्तक - हिंदी........ 49
पृथ्वी 51
कसरत 52
समय की कीमत........ 53
लग गई ऐसी लत........ 54
अप्रैल फूल बनाया 56
आई गर्मी आई गर्मी........ 58
खेल खेल में पढ़बो अउ सिखबो........ 59
फूल 61
खोलें खिड़की 62
तोर अँचरा के छइयाँ 63
कुल्फी........ 65
सूरज 66
भारतीय सांस्कृति 68
हवा........ 71
किताब पढ़ो 72
गौरी की होली........ 73
बसंत ऋतु........ 75
सेवा और सम्मान 76
घर स्वर्ग से सुंदर........ 77
जीवन एक पाठशाला 78

सुरेखा 81
नहीं आती है चिड़िया 83
अज्ञान ही अंधकार है 84
ऋतु वसन्त 85
सुग्गा - सुग्गी 86
सर जगदीश चंद्र बसु 88
धरती कहे पुकार के 92
INDIA 95
Alphabet poem 96
विश्व महिला दिवस 97
होली और रंग 99
नारी शक्ति है 100
गरमी 102
बाल पहेलियाँ 104
हम सफर 106
किसान 107
माँ 108
मेरे घर में श्यामा गैया 109
अगले जनम मोहे नारी ही कीजो 110
नारी शक्ति 112
चलो! मतदान कर आएं 114
फूल 115
फोर लेन सड़क 117
पुष्प प्रदर्शनी 119

फूल खिलाओ.. 121

मनचली पतंग 122

संघर्ष जीवन का मूल मंत्र 123

ऋतु करिधाल महिला वैज्ञानिक... 126

तितली 128

घोड़ी से बच्चा जन्मा 129

खरगोश 132

लक्ष्य 134

झगरा में का राखे हे 136

जब गधेराम आते हैं.. 138

हिंदी वाली बगिया 139

वह क्यों काटे जेब भला 140

कथनी और करनी.. 141

दूध और रोटी... 142

गणित 144

नानी माँ 146

मेरी गुड़िया.. 147

खुराफ़ात करने का मन करता है.. 149

नानपन के बात 150

इम्तिहाँ का है डगर 151

वक्त तो सबका आता है 152

मोर स्कूल सुघ्घर 154

कागज का टुकड़ा 155

मेरी दादी 157

सूरज निकला 158

शिक्षा और अशिक्षा 159

पिता का साया 163

संस्कार चाहिए 164

बुरे दौर को भूल जाते हैं 165

बालिका शिक्षा की लौ 167

होली 168

होली तिहार 170

तितली रानी 172

मेले में मौज 173

चीटा भागा घोड़ा सा 174

टॉपर बनने के लिए फोर्स 175

मुर्गा बोले कूंकडूं- कूं 178

जीतने की कोशिश मैं करता रहूंगा 180

चित्र देख कर कहानी लिखो 182

- मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी 182
- जिज्ञासा वर्मा, कक्षा 10 वीं, शा. कन्या हाईस्कूल रतनपुर, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी 183
- नितिन राघव द्वारा भेजी गई कहानी 184
- संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 184
- अनन्या तंबोली, कक्षा छठवीं द्वारा भेजी गई कहानी 185
- अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 186

पापा की यादें

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

नजर ढूँढती है राहों पर, पापा जल्दी आओ ना.
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना,

बैठे-बैठे रोते रहते, खाना नहीं खिलाता है,
प्यास लगे तब भी मुँह में जी, पानी नहीं पिलाता है.
आकर मुझको अपनी बाहों में, झट से गले लगाओ ना,
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना.

जब से इस दुनिया को छोड़े, साथ नहीं कोई देते,
पापा बिन हम कैसे जीते, खबर नहीं कोई लेते.
रिश्ते क्या ऐसे होते हैं, थोड़ा सा समझाओ ना,
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना.

जब-जब हम राहों पर चलते, अपनी नजर टिकाते हैं,
मदद माँगने जाते हैं तो, आँखे हमें दिखाते हैं.
हम भी आगे बढ़ सकते हैं, नई सोच अब लाओ ना,
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना.

मोल यहाँ पैसे का होता, करे उधारी अपने ही,
अपने ही पैसे मँगने को, पड़े भिखारी बनने ही.
यहाँ सामना कैसे करना, आकर के समझाओ ना,
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना.

*****

समय की महिमा

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

अजब समय की चाल है देखो,
हाथों से फिसलती जैसे रेत है.
साथ हो गर तो जीवन सुखमय,
रूठे तो लगे कि बंजर खेत है.

पलक झपकते हाल बदल दे,
ईश्वर भी होते नतमस्तक.
इसकी गाथा से अटी पड़ी है,
पुराण ग्रंथ इतिहास की पुस्तक.

किसने सोची होगी यह बात,
बनकर बैरी आई थी रात.
बनते राजा जो अगले दिन में,
भटके चौदह बरस वो वन में.

चौसर लेकर समय था आया,
बचा न कुछ भी राज पाठ.
भाई बने आपस में दुश्मन,
मचा युद्ध और रक्तपात.

आर्यावर्त के थे महाराणा,
जिनका प्रताप राष्ट्र ने माना.
काटते जो शत्रु की बोटी,
खानी पड़ी घास की रोटी.

ऐसा नहीं कि सिर्फ बुरा है,
ये समय अपने में खरा है.
खुशियां भी इससे मिली है,
बहुतों की तकदीर खिली है.

घनानंद का पाप बढ़ा तो,
समय ने गुरु चाणक्य चुना.
जंगल का इक आम युवा तब,
चंद्रगुप्त सम्राट बना.

बढ़ा प्रकोप था मुगलों का जब,
समय की सीख दी जीजा मां ने.
लाए स्वराज तब वीर शिवाजी,
गौरव सारा भारत माने.

समय बदलते देर ना लगती,
कारण है ये तथ्य विशेष का .
चाय बेचता एक युवा जब,
महामात्य होता है देश का .

गया समय ना वापस आता,
आते हुए का नहीं है भान.
अभी जो पल है पास आपके,
जियो उसी में बन "नादान".

*****

आस्था की बैग

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

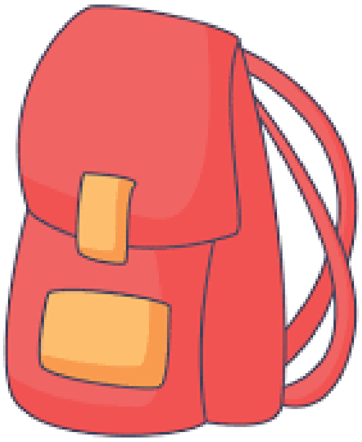

आस्था की है बैग निराली
आओ देखें क्या है डाली.

कुछ कापी, पुस्तकें देखी उसमें
पेंसिल के कुछ छिलके उसमें
कागज के कुछ टुकड़े उसमें
चाकलेट के कुछ रैपर उसमें
कुछ जगह अभी है खाली
आस्था की है बैग निराली

कुछ इमली के बीज उसमें
कुछ कंकड कुछ कंचे उसमें
पेन की ढक्कन देखी उसमें
कुछ पत्थर के बिल्लस उसमे
वेसलिन की डिब्बा खाली
आस्था की हैं बैग निराली

यह सामान बहुत अनमोल

बोलीआस्था बैग मत खोल

मेरा सामान बिखर जाएगा

जो खोजूं मिल न पाएगा

ऐसे करती वह रखवाली

आस्था की है बैग निराली.

*****

शेर और बंदर की दोस्ती

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक जंगल में पप्पू नाम का बंदर रहता था. पप्पू नेक दिल और मिलन सार था. उसे नये-नये दोस्त बनाने का शौक था. पप्पू जंगल के किसी जानवर पशु पक्षी को तंग नहीं करता था. पप्पू के व्यवहार से जंगल के सारे जानवर जीव जन्तु पशु पक्षी खुश रहते थे. आम का मौसम था. एक दिन पप्पू पेड़ पर बैठा पके आम तोड़कर खा रहा था. तभी वहाँ बंटू शेर आया और पप्पू को आम खाते देख कर पूछा बंदर भाई, तुम क्या खा रहे हो? बंदर बोला, शेर भाई, मैं पके आम खा रहा हूँ. क्या तुम भी पके आम खाओगे?

आम कैसा होता है हमें बताओ तो जरा? शेर ने बंदर से पूछा.

बंदर बोला आम बहुत रस भरे और मीठे होते हैं. बंदर की बात सुन कर शेर के मुंह में पानी आ गया.

शेर बोला मैं भी कुछ आम खाना चाहता हूँ .

शेर की बात सुन कर बंदर ने दस बारह पके आम तोड़ कर गिरा दिए. शेर को आम का स्वाद बहुत पसंद आया. सारे आम खा कर शेर बोला बंदर भाई मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ. क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?

बंदर बोला हमारी तुम्हारी दोस्ती कैसे होगी? तुम मुझे ही मार कर खा जाओगे तो मैं क्या कर पाउँगा?

बंदर भाई मुझपर विश्वास करो मैं ऐसा कभी नही करूँगा.

बंदर बोला ठीक है, मैं तुम्हारी दोस्ती स्वीकार करता हूँ. तुम्हें जब भी भूख लगे मेरे पास आ जाना मैं तुम्हे तरह तरह के पके हुए फल खिलाऊँगा.

वाह बंदर भाई आप ने तो हमारी खाने पीने की समस्या हल कर दी. मैं आप से अपनी दोस्ती कभी नहीं तोड़ूँगा.

कुछ दिनो में बंटू शेर पूर्ण शाकाहारी बन गया. बंटू, पप्पू को अपनी पीठ पर बिठाकर जंगल घुमाता और तरह तरह के पके फल खाकर अपना पेट भरता. बंदर और शेर की दोस्ती सारे जंगल में मशहूर हो गई.

एक दिन पप्पू बंदर को एक शिकारी अपने जाल में फँसाकर शहर ले जाने लगा. पप्पू बंदर ने जोर से चिल्ला कर बंटू से कहा बंटू भाई तुम तुरंत आकर मुझे इस शिकारी से बचाओ, जल्दी आओ.

बंटू शेर, पप्पू बंदर की आवाज सुन कर दहाड़ता हुआ उसे बचाने चल पड़ा. बंटू शेर शिकारी के सामने पहुँच कर बोला अरे ओ दुष्ट शिकारी तुम मेरे दोस्त को पकड कर कहॉं ले जा रहे हो? इसे तुरंत छोड दो वर्ना मैं तुम्हें जिन्दा नही छोडूंगा. शेर को देखकर शिकारी थर-थर कांपने लगा. उसने तुरंत जाल से पप्पू बंदर को बाहर निकाल दिया और बोला मेरी जान बक्श दो. अब मैं कभी किसी का शिकार नही करूँगा.

बंटू शेर ने कहा आज तो मैं तुम्हें छोड़ दे रहा हूं. दोबारा फिर किसी को जाल में फँसाया तो मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोडूंगा. यहाँ से चले जाओ और फिर कभी इस जंगल में मत आना. शिकारी दौडकर जंगल से भाग गया. जाल से छुटकारा पा कर पप्पू बंदर, बंटू शेर को धन्यवाद देते हुए बोला बंटू भाई आज तुम नही आते तो शिकारी हमें ले कर चला जाता. हमें शिकारी से बचा कर अपनी सच्ची दोस्ती का हक अदा कर दिया है.

बंटू शेर बोला पप्पू भाई चलो तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ आज से हम तुम एक साथ रहेगें, ताकि हर मुसीबत पर हम विजय पा सकें.

*****

रुक आती हूँ

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

माथे से बहते पसीने में
जरा शीतल बयार दूं.
धुँआ से रोती आँखे,
बुझते चूल्हे में
लकड़ी जरा सम्हाल लूं.
रुक आती हूँ.
जरा जीवन से हिसाब लूं.

थक गई दौड़तीं भागती
गेहूं में बैठी चिड़िया को पार दूं
सुना है शोर बहुत मेरी कानों ने
भोर की पुरवाई मन मे उतार लूं.
रुक आती हूँ
जरा जीवन से हिसाब लूं.

मुनिया की बहती नाक
अभी पोछा हैं आँचल से
भूख मुझे भी है?
पानी की एक घुट उतार लूं.
रुक आती हूँ
जरा जीवन से हिसाब लूं.

*****

दुष्ट कोरोना अब तूँ सुन

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

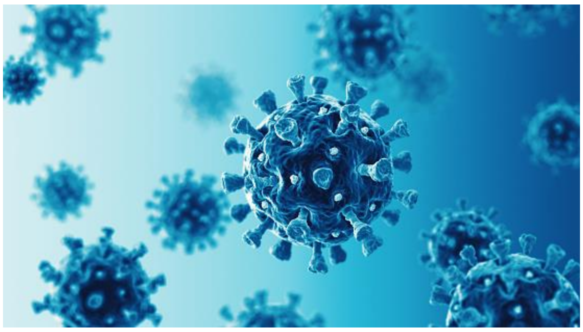

दुष्ट कोरोना अब तू सुन
तेरी अब तो आफत आई.
मास्क पहन कर बाहर जाते
चाचा, चाची, मैया ताई.

मामा मामी मौसा पहने
और पहनते दादा, दादी.
भैया, भाभी रोज पहनते,
मिली सभी को अब आजादी.

कोरोना के भाई डेल्टा ने
दहशत खूब मचाई.
जाने कितनों को ये ले डूबा,
मचाई खूब तबाही.

वैक्सीन और होशियारी से,
सबने इसे भगाया.
छुप गया कोने में जाकर
ओमीक्रोन अब आया.

वैक्सीन लगाकर हर जन को,
इसको मार भगाएंगे.
फिर ना आने देंगे इसको,
बूस्टर डोज लगवाएंगे.

*****

टोपी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार

सूती टोपी, ऊनी टोपी
टोपी मखमल वाली.
गाँधी टोपी, अन्ना टोपी,
टोपी बन्दर वाली.

सीधी टोपी, तिरझी टोपी,
टोपी शिमला वाली.
राजू राधा पहने टोपी,
सबकी छटा निराली.

नेता पहने अदल-बदल कर,
जनता को पहनायें.
लट्टू जैसे नाच रहे हैं,
टोपी खूब घुमायें.

दमदम दादा जी से बोला,
एक टोपी दिलवा दो.
रंग-बिरंगी कलगी वाली,
सबसे अलग सिला दो.

टोपी पहन चलूँ मैं घर से,
खासा सेठ लगूंगा.
सारे बच्चे करें सलामी,
उनका बॉस बनूँगा.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

गाँव का मेला

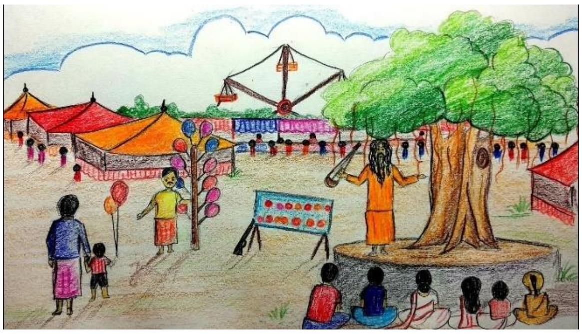

रोहित अपने गाँव जाने वाली बस की प्रतीक्षा कर रहा था. अगले दिन उसके गाँव का वार्षिक मेला था. दो साल बाद मेले के समय पर रोहित गाँव जा रहा था. उसके मन में मेले से जुड़ी यादें घुमड़ रही थीं.

रोहित नवोदय विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ता था. पाँचवीं तक गाँव की प्राथमिक शाला में पढ़ने के बाद उसका चयन नवोदय विद्यालय के लिए हो गया था और वह गाँव से चला आया था. मार्च 2020 में अचानक कोरोना वायरस के प्रसार के कारण स्कूल बंद हो गए थे तब उसकी छठी कक्षा की परीक्षाएँ भी नहीं हुई थीं. उस वर्ष गाँव का मेला भी आयोजित नहीं हुआ था. 2021 के पूरे साल भी स्कूल बंद ही रहा, लेकिन ऑनलाइन कक्षाएँ चलती रहीं इसलिए रोहित को गाँव में रहने का मौका नहीं मिला क्योंकि गाँव में नेटवर्क की समस्या के कारण वह कक्षाओं में शामिल नहीं हो पाता था. पिछले वर्ष भी गाँव का मेला आयोजित नहीं हुआ था.

अब इस वर्ष कोरोना वायरस का प्रकोप खत्म तो नहीं हुआ था पर उसका प्रसार कुछ कम था इसलिए इस वर्ष गाँव का मेला आयोजित होने वाला था.

बस आई और रोहित बस में बैठते ही मेले की यादों में खो गया. दोस्तों के साथ मेले में घूमना, झूला झूलना, और माँ से मेले के लिए मिलने वाले 100 रुपयों से अपनी मनचाही चीजें खरीदना और मिठाई खाना.

क्या दो वर्ष के बाद इस वर्ष के मेले में वह आनंद आएगा? कोरोना वायरस से बचने की शर्तों के बीच यह मेला होने वाला था. रोहित सोचने लगा कि क्या मेले में झूला झूलना सुरक्षित होगा? क्या मेले की

दुकानों से खाने की वस्तुएँ लेना सही होगा? क्या इस वर्ष के मेले में वह पहले जैसा उत्साह और आनंद रहेगा? यही सोचते हुए बस कब गाँव पहुँच गई, उसे पता ही नहीं चला.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

रोहित बस से उतर कर अपने घर की ओर आगे बढ़ ही रहा था.तभी उसके सभी के दोस्त मिले. सभी दोस्त रोहित को देखकर खुश हो गए और कहा-दोस्त कुछ समय पश्चात हम सब आपके घर आ रहे हैं.फिर सब साथी एक साथ मेला देखने चलेंगे.रोहित ने दोस्तों को हाँ कहते हुए अपने घर पहुँच कर माँ को प्रणाम कर अपना हाल चाल बताया .

कुछ समय पश्चात उनके दोस्त तैयार होकर घरआते हैं. रोहित अपने दोस्तों के साथ कोरोना गाइड के नियमों का पालन करते हुए मेला में हर्षोल्लास के साथ जाते हैं.मेले में सभी दोस्त झूला झूलते हैं.झूला झूलने के पश्चात छल्ले (रिंग)का खेल एवं निशाना लगाने का खेल खेलकर सभी दोस्त खुश होते हैं. कुछ क्षण पश्चात एक लड़का फटे हुए कपड़ा पहने, मुरझाए हुए चेहरा, नजरें झुका कर, दुखी मन से कुछ खाने को माँग रहा था.आभास हो रहा था कि वह लड़का गरीब एवं ईमानदार है.उस लड़के को भूखे प्यासे देखकर रोहित को दया आ जाती है. वह उस लड़के के लिए खाने की व्यवस्था करता है और साथ में सभी दोस्त से चर्चा करते हैं कि इस लड़के के लिए हम सबको कुछ उपाय सोचना चाहिए. ताकि भीख न माँग कर स्वयं परिश्रम करके अपने भोजन की व्यवस्था करें.तभी पास में ही एक बड़ा दुकान है वहाँ सभी दोस्त पहुँच कर कुछ पैसे इकट्ठे कर उसके लिए गुब्बारे एवं कुछ खिलौने उन्हें खरीद कर देता है. और उसे बेचने की सलाह देते हुए कहता है- इससे जो भी पैसा प्राप्त होगा,उसमें से भोजन की व्यवस्था करना.शेष पैसे को इकट्ठा कर अपने दुकान को बढ़ाना ताकि आपको किसी दूसरे के पास हाथ फैलाने की जरूरत ना पड़े. वो लड़का सभी को धन्यवाद देते हुए कहता है कि मैं अपना कार्य मन लगाकर करूँगा और काम को हमेशा आगे बढ़ाने का प्रयास करता रहूँगा .यह कहकर वह अपने काम में लग जाता है.

कुछ देर पश्चात घर आने के पहले सभी दोस्त उस लड़का को देखते हैं कि वह लड़का गुब्बारा एवं खिलौने बेचने में व्यस्त रहता है.सभी दोस्त दुकान में लगी ग्राहकों की भीड़ को देखकर खुश हो जाते हैं और मन ही मन सोचते हैं कि उस बच्चे को जो हम लोगों ने आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया वह सफल रहा.सभी दोस्त अपने-अपने घर के लिए मिष्ठान लेकर खुशी-खुशी से वापस घर आ गए.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

चार भाइयों की कहानी

एक बार की बात है एक गाँव में एक मछुआरा रहता था उसके चार लड़के मोहन, सोहन , अनिल और कपिल थे. मछुआरा नदी में जाकर मछलियाँ पकड़ता था और उसको लेकर जाकर मार्किट में बेच देता था. जिससे उनके खाने का गुजारा ही केवल हो पाता था. एक दिन मछुआरा अपने चारों लड़कों को बुलाता है और कहता है बेटों अब तुम बड़े हो चुके हो मेरे पास तुम लोगों को देने के लिए कुछ भी नहीं है. इस मछुआरे के काम में ज़्यादा कमाई नहीं है तुम शहर में जाकर कोई कमाई का हुनर सीखो और जिससे तुम कमाई कर करो. अपने पिता की यह बात सुनकर सभी भाई मान गए और अगले दिन शहर के लिए चल दिए.

थोड़ी दूर जाने पर उनको चार रास्ते नज़र आये उनमे से बड़ा भाई बोला हम सबको इन अलग अलग रास्तों पर जाना चाहिए और चार साल बाद हम यही पर मिलेंगे. सभी भाई इस बात को मान गए और अलग अलग रास्ते पर निकल गए.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

हृदय की झंकार सुन

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

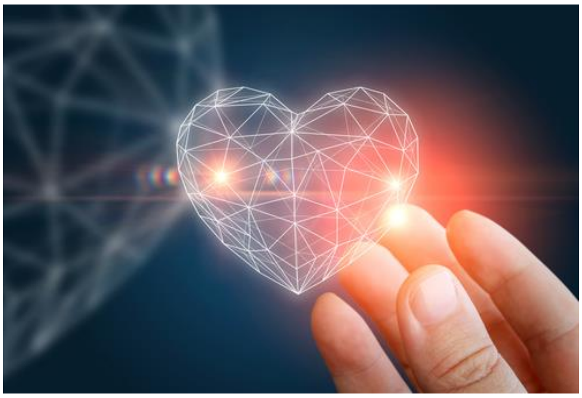

तुझ में कौशल, हो जा निपुण,
सतर्क रहकर लक्ष्य को चुन,
ललकार की है, तुझ में एक धुन,
हृदय की झंकार सुन.

एक नया सा, तुझ में जुनून,
साथ में भी रख सुकून,
समय का तू कर ना खून,
हृदय की झंकार सुन.

जिंदगी रंग बिरंगा ऊन,
एक नया सा ख्वाब बुन,
हर सपने को कर दे तू पूर्ण,
हृदय की झंकार सुन.

मधुर सी ध्वनि, तुझ में करे गुनगुन,
खुशनुमा सा, तू एक शगुन,
बेशुमार तुझ में है गुण,
हृदय की झंकार सुन.

तुझ में कौशल, हो जा निपुण,
सतर्क रहकर अपनों को चुन,
ललकार की है, तुझ में एक धुन,
हृदय की झंकार सुन.

*****

मैडम मैरी पियरे क्यूरी

रचनाकार- सुधारानी शर्मा

संघर्ष,और अभावों के बीच एक महिला की कहानी
जिन्होने अपने कार्य से परिवार मे तीन बार नोबेल पुरस्कार का सम्मान पाया.

मम्मी की लाडली थी
मान्या था, उसका नाम
पोलैंड की राजधानी
वारसा में, उसका धाम
गणित के शिक्षक थे पिताजी
साथ ही देशभक्त थे महान,
16 बरस में पाया मान्या ने
गोल्ड मेडल का सम्मान,
उच्च शिक्षा के लिए किया, पेरिस में प्रस्थान
एडमंड बाउंडी, ग्रेवीयल लिपमैन,के व्याख्यान ने
ने खींचा मान्या का ध्यान,
विद्युत की खोज में लगे, पियरे क्यूरी से मैरी की हुई पहचान,
दिल मिले, मन मिले, दोनों शादी के बंधन में बंध गये
यूरेनियम, थोरियम, रेडियो सक्रियता, का गुण बताया
बेटी आइरिन का हुआ जन्म,
रेडियम, पोलोनियम को सब ने जाना,

दोनों ने साथ ही भौतिकी का नोबेल पुरस्कार पाया,
अल्फा, बीटा, गामा, क्या है, परमाणु भार बताया मानवता की भलाई के लिए निःशुल्क
रेडियम निर्माण की विधि को
उद्योगपतियों को बताया
खुशी, ज्यादा दिन टिकी नहीं,
पति और स्वास्थ्य गंवाया,
रेडियम, पोलेनियम, परमाणु भार, के कारण दूसरा नोबेल पुरस्कार पाया.
बेटी आइरिन ने तीसरा नोबेल पुरस्कार
रसायन के लिए लाकर,
माता पिता, और देश का मान बढ़ाया
यह थी मैडम पियरे क्यूरी, जिनका करते हैं सम्मान
समस्त नारी शक्ति का, इन्होंने बढ़ाया मान
शत शत इन्हें प्रणाम, शत-शत इन्हें प्रणाम.

*****

सुब्रमण्यन चंद्रशेखर

रचनाकार- समीक्षा गायकवाड़

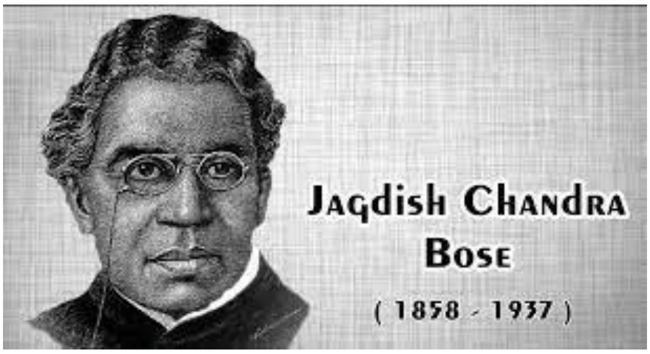

एक विज्ञानी भारत का ऐसा,
जो महके सुगंधित केसर.
लाहौर की भूमि में जन्में,
नाम सुब्रमण्यन चंद्रशेखर.

माह अक्टूबर 1910 में,
घर गुंजी किलकारी.
मस्तक देख हर मुख से निकला,
बालक है चमत्कारी.

मद्रास में हुई प्रारंभिक शिक्षा,
हर क्षेत्र जमाया अपना सिक्का.
कर शोध 18 की अल्पायु में,
दुनिया को कर दिया भौचक्का.

24 बरस होते ही पूरे,
तारे के रहस्य दिये खोल.
लंदन की रायल सोसायटी जाकर,
किया अद्भुत वर्णन ब्लैक होल.

27 की पल्लवित तरुणाई में,
बनाई भौतिकविद् की पहचान.
न्युट्रान तारे और ब्लैक होल से,
विज्ञान को दिया नव-ज्ञान.

फिर किया नभ-नक्षत्र में,
अद्वितीय अविष्कार अनोखा.
सूझबूझ और गणित लगाकर,
दिया तारों के भार का लेखा-जोखा.

हतप्रभ रह गयी दुनिया,
किया विश्व जगत पर उपकार.
चंद्रशेखर-सीमा नाम दें,
किया कोटि-कोटि सत्कार.

गहन अध्ययन और शिक्षण हेतु,
जननी जन्मभूमि से ली विदा.
कैम्ब्रिज की गलियों से निकले,
पर देश प्रेम से न हो सके जुदा.

इंदिरा गांधी के कर-कमलों से,
पाया पद्म विभूषण सम्मान.
परदेश में रहकर भी जिसने,
बढ़ाया देश का गौरव-मान.

सत्यनिष्ठा और लगन से,
खगोल ज्ञान में किया योगदान.
अपनी विद्वता और कौशल से,
पाया नोबेल पुरूस्कार महान.

सेवानिवृत्त होकर भी जिसने,
छात्रों का मार्ग प्रशस्त किया.
अध्ययन की अग्निपथ पर चलकर,
नव-पीढ़ी को आश्वस्त किया.

84 की आयु में संसार छोड़ चले,
अपनी पीछे नव-दीप जलाकर.
विज्ञान की नई राह दिखाकर,
भौतिक विज्ञान में छाप छोड़ चले.

अथक प्रयास और परिश्रम से,
जीवन किया विज्ञान को समर्पित.
ऐसे विज्ञान-पुरूष को,
मेरा श्रद्धा- सुमन अर्पित.

*****

सशक्त माँ, सशक्त विश्व

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

अत्यंत बुरे अनुभवों में से एक जो एक बच्चा देख सकता है, वह परिवार या समाज के हाथों अपनी माँ का उत्पीड़न है. चाहे वह घरेलू हिंसा, मौखिक दुर्व्यवहार, प्रतिबंध या अपने सपनों का पीछा करने के निषेध के माध्यम से हो, हमारी माताओं को कई तरह से प्रताड़ित किया जाता है.

यह न केवल माताओं के जीवन को नष्ट कर देता है बल्कि उनके बच्चों का भी जो कम उम्र में ही कठोर वास्तविकताओं के साक्षी बन जाते हैं. यह उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को उतना ही प्रभावित करता है जितना कि माताओं को प्रभावित करता है. इन घावों को भरने के लिए एक वयस्क के रूप में बच्चा जो सबसे अच्छी चीज कर सकता है, वह है खुद को और अपनी माताओं को सशक्त बनाना.

न केवल माताओं को अपनी बेटियों को नारीवादी परवरिश देनी चाहिए बल्कि बेटियों को भी अपनी मां को नारीवादी बनाना चाहिए और जिस तरह पुरुष अपने आने वाले वक्त में अपनी बेटी को आत्मनिर्भर देखना चाहता है उसी तरह उसे उसकी मां का भी साथ देना चाहिए प्रोत्साहन करना चाहिए .

पितृसत्तात्मक परवरिश को दूर करने में उसकी मदद करें, हमारी माताओं द्वारा प्रतिबंधों को सहन करने का सबसे बड़ा कारण उनकी पितृसत्तात्मक परवरिश है. आपकी माँ शादी के बाद शिक्षा और नौकरी छोड़ना सही मान सकती है क्योंकि उसके माँ या पिता ने उसे यह सिखाया है. माँ को पति या ससुराल वालों द्वारा गाली देना सामान्य बात लग सकती है क्योंकि उसने देखा कि यह उसकी माँ के साथ भी

होता है, जिसने चुप रहना चुना. आपकी माँ आप पर प्रतिबंध लगा सकती है क्योंकि उसकी माँ ने कहा कि बेटी के सुरक्षित जीवन को सुनिश्चित करने के लिए ये आवश्यक हैं.

लेकिन एक सशक्त बेटा या बेटी होने के नाते अपनी माँ को सिखाएँ कि पितृसत्तात्मक समाज द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के लिए एक महिला को कभी भी खुद को दोष नहीं देना चाहिए. उसे बताएँ कि मानवता के मूल नियम को भंग करने, एक-दूसरे के साथ असमान व्यवहार करने और अपमान करने के लिए उत्पीड़क को दोषी ठहराया जाना चाहिए और दंडित किया जाना चाहिए. उसे लैंगिक समानता के बारे में शिक्षित करें ताकि वह समझ सके कि उसके लिए गरिमा के साथ जीवन जीना क्यों महत्वपूर्ण है!

घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उसे समर्थन और प्रोत्साहित करें, दुर्भाग्य से, हम में से कुछ ऐसे परिवारों से हैं जहां घरेलू हिंसा और माता-पिता के बीच मौखिक दुर्व्यवहार एक रोजमर्रा की वास्तविकता है. हम इसके लिए जागते हैं और दिन भर उस दर्द के साथ सत्ता के लिए संघर्ष करते हैं जो हमारे दिल और दिमाग में हिंसा और दुर्व्यवहार का कारण बनता है. लेकिन इन घावों और हमारी माताओं के घावों को ठीक करने का एकमात्र तरीका उनके साथ खड़ा होना और उनका समर्थन करना है. हम सभी जानते हैं कि घरेलू हिंसा एक दंडनीय अपराध है और जागरूक नागरिकों के रूप में, हमें उत्पीड़कों को रोकने और उनके खिलाफ आवाज उठाने से नहीं शर्माना चाहिए, भले ही हम उनसे प्यार करते हों. हमें अपनी माताओं को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में प्रोत्साहित करने और शिक्षित करने की आवश्यकता है और जब वे उनका प्रयोग करती हैं तो उनके साथ खड़े होने की आवश्यकता है.

अगर वह तलाक चाहती है तो उसका समर्थन करें, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आज भी हमारे समाज में तलाक एक टैबू बना हुआ है. महिलाओं को ऐसी दुनिया में जाने के बजाय शादी के भीतर होने वाले सभी अन्याय और समस्याओं को सहन करना सिखाया जाता है जहाँ महिलाओं का कोई सम्मान नहीं होता है. ऐसे में अगर आपकी माँ को वैवाहिक जीवन छोड़ने की जरूरत महसूस होती है तो उनकी स्थिति को समझें और उनका साथ दें. आप एकमात्र व्यक्ति हो सकते हैं जिससे वह सहायता और समर्थन मांग सकती है. इसलिए अपनी माँ के लिए अपने प्यार को सामाजिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित न होने दें, जो हमेशा एक असफल विवाह के लिए महिलाओं को दोषी ठहराते हैं.

यह सबसे अच्छा होगा यदि आप वह हैं जो अपनी माँ को गरिमा के साथ एक नया जीवन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं.

जब भी संभव हो उसकी आर्थिक मदद करें, हमारी अधिकांश माताएँ गृहिणी हो सकती हैं जिनके पास वित्तीय शक्ति नहीं है जिसके बिना एक व्यक्ति हमारे समाज में कभी सम्मान और समानता अर्जित नहीं कर सकता है. आज भी, हमारी माताओं को एक-एक पैसे के लिए अपने पतियों पर निर्भर रहना पड़ सकता है, जबकि पति अपनी पत्नी को अपने बैंक बैलेंस की आसान पहुँच की अनुमति देने के लिए बहुत गर्व और नियंत्रण में हो सकता है. इसलिए सशक्त और कमाई करने वाले वयस्कों के रूप में, अपनी माताओं की आर्थिक मदद करें और उसे आर्थिक रूप से सशक्त और शिक्षित बनने में भी मदद करें ताकि उसे अपने पति से उधार लिए गए हर पैसे के लिए विनम्र और जवाबदेह न बनना पड़े.

उसे उस शिक्षा, व्यवसाय या नौकरी को फिर से शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें जिसे उसने छोड़ दिया था, एक बार शादी हो जाने या माँ बनने के बाद माताओं में अपनी शिक्षा या नौकरी छोड़ देना आम बात है. उन्हें अपना समय पति और बच्चों को देना पड़ता था जबकि उनकी शिक्षा या नौकरी को कभी भी महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था. लेकिन सशक्त बेटों और बेटियों के रूप में, अपनी माताओं को फिर से विश्वविद्यालय में दाखिला लेने और उनकी शिक्षा को फिर से शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें. यह कभी न सोचें कि फिर से शुरू करने में बहुत देर हो चुकी है. समाज ने इस बात के पर्याप्त उदाहरण दिए हैं कि कैसे माताओं ने अपनी पीएचडी पूरी की है या कम उम्र में विभिन्न क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है. हाँ, इस फैसले को कई विरोधों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन क्या आपकी माँ के सशक्तिकरण और खुशी से ज्यादा कुछ तर्क मायने रखते हैं?

माँ बनना एक कठिन काम है चाहे आप कहीं भी रहती हों. परिवार का पालन-पोषण करने से लेकर व्यवसाय चलाने या खेत चलाने तक, दुनिया भर की माताएँ कई ज़िम्मेदारियाँ निभाती हैं. वे गरीबी के प्रभावों को महसूस करने वाले पहले लोगों में भी हैं. महिलाओं और पुरुषों के बीच गरीबी की खाई विशेष रूप से 25 और 34 की उम्र के बीच स्पष्ट होती है, क्योंकि कई महिलाएँ चाइल्डकेयर के असमान बोझ के साथ भुगतान किए गए काम को संतुलित करने का प्रयास करती हैं. दुनिया भर में, इस आयु वर्ग के हर 100 पुरुष जो गरीब हैं, उनमें 122 महिलाएँ हैं.

माँ अपने बच्चों और अपने समुदायों के लिए एक बेहतर भविष्य प्रदान करने की कोशिश करते हुए भारी चुनौतियों का सामना करती हैं. महिलाओं के अधिकारों के सवाल ने हमेशा गहरे विवाद को जन्म दिया है. जबकि कुछ परंपरावादियों का दावा है कि महिलाओं को अपने घरों और बच्चों के रखरखाव पर ध्यान देना चाहिए, अधिक उदारवादी लोगों ने दावा किया है कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार होने चाहिए.

सबसे पहले, यह मानना गलत है कि एक महिला के पास नौकरी नहीं हो सकती है और वह अपने बच्चों को प्रभावी ढंग से नहीं पाल सकती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि अंशकालिक और ऑनलाइन काम स्पष्ट रूप से महिलाओं को अपने बच्चों की देखभाल के लिए समय और स्थान देता है. उदाहरण के लिए, ऑर्गनाइजेशन फॉर चाइल्ड केयर ने पाया कि जिन माताओं ने पार्ट टाइम या ऑनलाइन काम किया है, वे अपने बच्चों (स्कूल के घंटों के बाद) के साथ गृहणियों के रूप में ज्यादा समय बिताती हैं. इसलिए, यह दावा करना असंगत है - जैसा कि परंपरावादी करते हैं - कि करियर होने से एक माँ की अपने बच्चों की देखभाल करने की क्षमता से समझौता होता है.

दूसरे, काम करने वाली माताओं को भी अपने बच्चों की शिक्षा और व्यक्तिगत विकास में अधिक निवेश करने का साधन प्राप्त होता है. ऐसा इसलिए है क्योंकि राजस्व का एक अतिरिक्त स्रोत माता-पिता को अपने बच्चों को निजी स्कूलों और अतिरिक्त कक्षाओं में भेजने में सक्षम बनाता है. उदाहरण के लिए, हार्वर्ड के एक अध्ययन में पाया गया कि यदि माता-पिता दोनों के पास वित्तीय आय के अलग-अलग स्रोत थे, तो माता-पिता के इसमें निवेश करने की संभावना 50% अधिक थी. इसलिए यह स्पष्ट है कि एक कामकाजी माँ होने के नाते, अच्छे पालन-पोषण में बाधा के बजाय सुविधा हो सकती है.

निष्कर्ष रूप में, इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि महिलाएँ नौकरी कर सकती हैं और अच्छी माँ बन सकती हैं. इस दृष्टि से देखा जाए तो यह स्पष्ट है कि परम्परावादी दृष्टिकोण काफी हद तक निराधार है! गरीबी के मुद्दों से निपटना महिलाओं और माताओं के सशक्तिकरण से बहुत जुड़ा हुआ है; यह उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा के मुद्दों के लिए पर्याप्त समर्थन प्राप्त कराएगा, साथ ही उनकी आर्थिक स्वायत्तता की उपलब्धि के लिए, और इस प्रकार उन्हें अपने परिवार को विकसित करने में मदद मिलेगी! इसलिए, गरीबी उन्मूलन के लिए किसी भी रणनीति और नीति-निर्माण के केंद्र में माताओं को होना चाहिए. माताओं पर ध्यान केंद्रित करने से गरीबी के अंतर-पीढ़ी के चक्र को तोड़ने की क्षमता है.

नजरअंदाज ना करें एक दूसरे के घाव,
लाए समाज में एक नया बदलाव,
चलो सही सोच से हो जाए महान,
सशक्त मां तो सशक्त पूरा जहान.

*****

रंग बिरंगी होली आयी

रचनाकार- कुमारी गुड़िया गौतम

रंग -बिरंगी देखो आज होली है आयी,
सबके चेहरे पे आज खुशियां है लायी.
सब बच्चों को होली आज खुब है भारी,
सुबह से शुरू हो जाती हमारी होली.

भक्त प्रहलाद की बात याद है आयी,
अवगुणों पर गुणों की जीत फहरायी.
इन रंगों ने प्रेम स्नेह की गंगा हैं बहायी,
खुशियों की सुबह है आज देखो आयी.

रंगों के रंग में सजी दुनिया आज सारी,
बच्चें बुढ़े सब कर रहे होली की तैयारी.
काव्य सम्मेलन की सज गई महफ़िल,
सब मिलजुल कर बनो प्यार से होली.

नफरतों को भुलाकर सबने मिस्री घोली
पिचकारी लिए निकल पड़े सारी मंडली
छुन्नु-मुन्नू की टोली आज हुई मतवाली,
देवर-भाभी जी संग करें आज ठिठोली

रंग बिरंगी देखो आज होली है आयी,
देवर -भाभी जी संग खुब होली खेली.
रंग बिरंगी देखो आज होली है आयी,
सबके चेहरे पे आज खुशियां है छायी.

*****

छोटी सी जिंदगी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

छोटी सी है जिंदगी, भर दो जी मुस्कान.
चार दिनों का है सफर, परेशान इंसान.

हँस कर जीना सीख लो, करो सभी से प्यार.
सुख-दुख जीवन अंग है, कभी न मानो हार.

माटी का ये देह हैं, करना नहीं घमंड.
ईश्वर बैठे देखते, तुम्हें मिलेगा दण्ड.

भेद-भाव को छोड़ कर, रहना सब के साथ.
विपत समय आये सखी, पकड़े रहना हाथ.

आये खाली हाथ है, कर लो अच्छे काम.
छोटी सी है जिंदगी, सदा कमाओ नाम.

*****

गुलाब और काँटें

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

रहता काँटों संग मैं, मेरा नाम गुलाब.
जिसके हाथों में गया, लगे देखने ख्वाब.
लगे देखने ख्वाब, प्रेम जोड़े हैं भाते.
करते जब इजहार, सदा मुझको वे लाते.
खुशियाँ उनकी देख, नहीं कुछ मैं भी कहता.
काँटों का ये दर्द, सहन कर मैं हूँ रहता.

देते हरदम साथ हैं, मेरे सच्चे यार.
रक्षा करते है सदा, और निभाते प्यार.
और निभाते प्यार, कभी वे चुभ से जाते.
बैठे बनकर ठाठ, हाथ कोई न लगाते.
काँटों की है बात, इसे कोई नही लेते.
रखते हैं सम्भाल, साथ वो हरदम देते.

*****

भारतीय भाषाएं अनमोल रत्न

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

भारत सॉफ्टवेयर क्षेत्र की एक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है. एक अनुमान के अनुसार विश्व के विकसित देशों की सॉफ्टवेयर कंपनियों के कर्मचारियों में भारतीय मूल के कई डेवलपर, प्रोग्रामर और सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ मिलेंगे जो बड़े-बड़े पैकेजों से अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं. परंतु कृषि और गाँव प्रधान देश में अभी भी डिजिटल विकास हमारे ग्रामीण व कृषक भाइयों तक अपेक्षाकृत कम पहुँचा है. हालांकि केंद्र और राज्य सरकारें इसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं कि कृषि और ग्रामीण इलाकों में डिजिटल क्रांति तेजी से पहुँचे ताकि अनेक शासकीय कार्य आसानी और शीघ्रता से हो सकें तथा उनको मिलने वाली सहायता राशि, पैकेज, उनके मेहनत और कृषि उपज का पैसा, अकाउंट में सीधे ट्रांसफर हो सके ताकि बिचौलिए, रिश्वतखोरी और अवैध वसूली करने वालों का आंकड़ा शून्य हो जाए और ग्रामीण किसानों के जीवन में समृद्धि आ सके.

अगर हम विभिन्न डिजिटल प्रौद्योगिकियों से हमारे जीवन, जीवनस्तर, हमारी विरासत के संरक्षण, विकास के अवसर की बात करें तो डिजिटल प्रौद्योगिकी ने हमारी जीवनशैली बदल दी है. अधिकतम बदलाव सकारात्मक दिशा में तो कुछ हद तक नकारात्मक दिशा में भी हुआ है. जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह हर परिवर्तन के कुछ नकारात्मक पहलू होते हैं. हमें कोशिश करके नकारात्मकता छोड़कर सकारात्मकता की ओर बढ़ कर डिजिटल प्रौद्योगिकी की विभिन्न सुविधाओं का लाभ उठाने की ज़रूरत है.

अगर हम अपनी भाषा और संस्कृति विरासत हजारों वर्ष पूर्व इतिहास के उन संदर्भित पन्नों की बात करें तो उन्हें संजोकर रखने का महत्वपूर्ण काम डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से हो सकता है. आज हजारों लाखों पृष्ठों की हमारी विरासत, संस्कृति, भाषाओं नीतियों का संरक्षण हम डिजिटल प्रौद्योगिकी

से करने में सफल हुए हैं. नहीं तो आगे चलकर हमारी अगली पीढ़ियों तक यह स्वर्ण पन्नों की लिखित विरासत पहुँचती या नहीं इसका जवाब समय के गर्भ में छिपा था. परंतु अभी हम डिजिटल प्रौद्योगिकी के भरोसे कह सकते हैं कि यह विरासत सुरक्षित रहेगी, यह उसका सकारात्मक उपयोग और संरक्षण योग्य और सुरक्षित हाथों में रहने पर निर्भर है. हमारी भाषाओं संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने के लिए सुरक्षित प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग स्वस्थ और सकारात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करना होगा. यह हमें विकास के नए अवसर प्रदान करते हैं. राज्य शासन को बड़े पैमाने पर स्थानीय भाषाओं का उपयोग करना चाहिए भाषाएँ जीवित रहेंगी तो अनेकता में एकता की भारतीय खूबसूरती, संस्कृति जीवित रहेगी माननीय उपराष्ट्रपति ने एक पुस्तक के वर्चुअल विमोचन के अवसर पर कहा कि इंटरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने हमें अपनी भाषाओं के संरक्षण और विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं, उन्होंने इस प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि जिस दिन हमारी भाषा को भुला दिया जाएगा, हमारी संस्कृति भी विलुप्त हो जाएगी. उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन साहित्य को युवाओं के निकट लाया जाना चाहिए. उन्होंने तेलुगु भाषा के लिए काम करने वाले संगठनों से तेलुगु की समृद्ध साहित्यिक संपदा को सभी के लिए उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लेने का आग्रह किया. पारंपरिक शब्दावली को सभी के लिए सुलभ बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए, उन्होंने कहा कि मौजूदा शब्दों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना और बदलते रुझानों के अनुरूप नए शब्दों का निर्माण करना आवश्यक है. उन्होंने अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विरासत को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया है.

उन्होंने सभी से व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इसके लिए प्रयास करने का आग्रह किया. इसके पूर्व भी उन्होंने एक कार्यक्रम में कहा था कि भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना उनका प्रिय विषय रहा है, उन्होंने कहा कि भाषा किसी संस्कृति की जीवन रेखा है. हमें भाषाओं के संरक्षण, प्रचार और प्रसार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए. उन्होंने कहा कि जब कोई भाषा समाप्त हो जाती है, तो उस भाषा से जुड़ी सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और रीति-रिवाजों का क्षय होगा. भाषा के संरक्षण और विकास के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, उन्होंने लोगों केप अपनी मातृभाषा में बोलने की आवश्यकता का समर्थन किया, सिवाय इसके कि जहाँ किसी अन्य भाषा में संवाद करना आवश्यक हो. उन्होंने कहा कि प्राथमिक विद्यालय स्तर पर मातृभाषा को बढ़ावा देना प्रारम्भ करना चाहिए. उन्होंने सभी राज्य सरकारों को प्राथमिक शिक्षा के दौरान मातृभाषा को अनिवार्य बनाने की सलाह दी.

उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि देश भर में राज्य प्रशासन द्वारा दक्षता और सेवाओं के परिदान में सुधार के लिए संबंधित स्थानीय भाषाओं का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाना चाहिए. उन्होंने कहा, किसी भी भाषा को संरक्षित करने या उसे बढ़ावा देने का सबसे अच्छा तरीका है कि इसका उपयोग

दैनिक जीवन में बड़े पैमाने पर किया जाए.क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए संसद की पहल का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि राज्यसभा सदस्य अब संसद में 22 अधिसूचित भाषाओं में से किसी भी भाषा में बात कर सकते हैं. उन्होंने भाषाओं और संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग करने का सुझाव दिया. उन्होंने सभी भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक ऑनलाइन शब्दकोश, विश्वकोश, शब्दावलियों, शोध लेखों और खोज योग्य डेटाबेस के निर्माण का आह्वान किया. उन्होंने कहा, 'पुरानी पांडुलिपियों की पुनर्प्राप्ति के लिए उन्हें इलेक्ट्रॉनिक रूप से संगृहीत किया जाना चाहिए.

डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने हमें अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं तथा आधुनिक युग में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग स्वस्थ और सकारात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करना ज़रूरी है.

*****

नारी शक्ति

रचनाकार- हर्षा मिश्रा

बस नयनों में धार नहीं,
ये नयना अग्नि धारक हैं.
तू माँ काली का रूप समझ,
जो चण्ड-मुण्ड संघारी हैं.

मात्र अनगिनत केश नहीं,
जो गिद्ध-हस्त में फँस जाएं.
तू द्रौपदी के केश समझ,
जो दु:शासन पर भारी हैं.

बस सुंदर एक देह नहीं,
जो कामुक आँखे चिर सकें.
तू माँ दुर्गा का रूप समझ,
जो शक्ति अभ्यंकारी हैं.

जिन अधरों पर लाली है,
मत समझो अज्ञान उन्हें.
तू माँ गायत्री रूप समझ,
जो ज्ञान-गंग अधिकारी हैं.

*****

गृहणी

रचनाकार- अर्चना लखोटिया

बहुत कड़वा है यह अनुभव, सोच और सच्चाई का.
दोष किसका है यहां पर, केवल अपने आप का.
सब को सुला कर सोना, सबसे पहले जागना.
सबको खुश रखना पर अपना ही ध्यान न रखना.

सास, ससुर, पति और बच्चे बस परिवार को संभालना.
फरमाइशें पूरी करते, अपने अरमानों को कुचलना.
कर रही हूँ हद से बढ़ कर, नहीं है जिसका कोई मोल.
घर में उसको कौन चुका सकता , जो है पूर्णतः अनमोल.

*****

अमीर और गरीब की परिभाषा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

जिंदगी में किसी के पास कोई वस्तु अधिक होती है तो कोई चीज कम. इंसान केवल पैसों से ही अमीर नहीं होता है और गरीब भी नहीं होता. हम जीवन में जो वस्तु ज्यादा चाहते हैं, या किसी मनुष्य से माँगते हैं वह भी एक प्रकार की गरीबी ही होती है. कोई प्यार से गरीब, तो कोई समझदारी से गरीब, कोई तकनीकी व्यवसाय में गरीब, तो कोई रंग रूप से, इंसान हमेशा कोशिश करता है कि वह अपनी इस कमी को कैसे दूर करे.

धन की अधिकता होने पर लोग यह सोचने लगते हैं कि वे बहुत अमीर हो गए, उन्हें स्वयं पर एक अलग तरह का अभिमान होता है.

पर फिर भी कहीं ना कहीं किसी ना किसी चीज के लिए वह बहुत तड़प रहे होते है! बहुत सारा धन होने के बावजूद भी, उनकी जिंदगी में बहुत खालीपन होता है, जिसे वह पूरी कोशिश करके भरना चाहते हैं.

सच तो यह है कि हम हमेशा किसी ना किसी चीज में अमीर होंगे और किसी अन्य के मामले में गरीब होंगे; तो अभिमान,अहंकार की बात यहीं खत्म हो जाती है.

हमें यह कहना चाहिए कि आप पैसों से अमीर है या मैं पैसों से अमीर हूँ. हम यह भी कह सकते हैं कि मैं पैसों से नहीं पर ज्ञान, समझदारी, प्रेम और खुशी से अमीर हूँ.

मैंने अक्सर पैसों से गरीब को बहुत खुश रहते हुए और जो व्यक्ति पैसों से अमीर हे उसको मानसिक तनाव में, और परेशान होते हुए देखा है क्योंकि कोई व्यक्ति पैसों से गरीब होता है पर खुशियों से अमीर होता है.

हमें जिंदगी में संतुष्ट होने की अधिक कोशिश करनी चाहिए, कोशिश यह भी हो कि हम जो चाहे हमें वह मिले पर स्वयं की काबिलियत से. कभी-कभी हम कुछ पाने के लिए दूसरों को परेशान करते हैं जैसे बच्चों का मम्मी पापा को परेशान करना, बड़े होने के बावजूद भी वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र ना होते हुए उनसे हर चीज माँगते रहते हैं.

ईश्वर अक्सर हमारी काबिलियत के अनुसार ही हमें हर वस्तु प्रदान करता है. अगर हमें कुछ चाहिए तो उसके लिए कोशिश करें और अपने अंदर योग्यता विकसित करें.

परमात्मा भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो स्वयं की सहायता करना जानते हैं.

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम संतुष्ट रहने का प्रयास करें और जो भी जीवन में मिल रहा है उन सभी की कद्र करें, सभी इंसानों की, सभी रिश्तो की, सभी दोस्तों की, सारी परिस्थितियों की, वरना जो हमारे पास नहीं है उसके चक्कर में हम वह भी खो देंगे जो हमारे पास है.

चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, इंसान हो, रिश्ता हो या कोई वस्तु हो अगर वह हमारी है तो हमारे पास ही रहेगी, जो हमारी नहीं है उसके लिए हम कभी-कभी कितना भी प्रयत्न कर ले वह नहीं मिल पाएगी, इसलिए जो हमारे पास है उसके लिए शुक्रगुजार होते हैं और जो नहीं है उसके लिए यह सोचकर प्रयत्न करते हैं, मिला तो ठीक नहीं तो जो है उसमें भी खुश.

हमें जीवन मैं संतुलन बना के रखना चाहिए, अगर हम किसी भी चीज में दुनिया के सबसे अमीर हो जाए तो उनमें से बहुत चीजें होंगी जिसमें हम गरीब रहेंगे साथ ही साथ हमें जीवन में किसी भी चीज के लिए भिखारी नहीं बनना है, हम में आत्म सम्मान होना चाहिए.

तो चलिए जीवन में संतुलन लाएँ,
हक हलाल की कमाई करके खाएँ,
कोई पैसों से गरीब, तो कोई हुनर से और कोई शक्ल सूरत से,
स्वयं के जीवन में संतुलन लाएँ.

*****

नारी महिमा

रचनाकार- अर्चना लखोटिया

चाँद की तरह शीतल है नारी,
सूर्य की तरह तेजस्वी है नारी.
धरती की तरह धैर्यवान है नारी,
सागर की तरह है गंभीर है नारी.

हिमालय सी विशाल है नारी,
वायु सी गतिमान है नारी,
नारी यदि दादी है तो दया का अवतार है,
नारी यदि काकी है तो करुणा का भंडार है.

नारी यदि भाभी है तो भावना का समर्पण है,
नारी यदि पत्नी है तो प्यार का दर्पण है,
नारी बहन बेटी है तो सब बन्धनों का अहसास है,
नारी यदि माँ है तो साक्षात परमात्मा है.

नारी कभी हारती नहीं उसे हराया जाता है,
लोग क्या कहेंगे यह कह कर डराया जाता है,
नारी यदि ठान ले तो मौत से भी लड़ जाती है,
नाजुक है अबला नहीं बलशाली हर नारी है.

सबको जीवन देने वाली नारी है,
संस्कारों की सौगात सिखाती नारी है,
आसमान में उड़ान भरती नारी है,
समुद्र में गोता लगाती नारी है.

नारी वो एहसास है जिसके लिए शब्दों की कोई अभिव्यक्ति नही,
कर सके जो उसे पूरी तरह से व्यक्त किसी भाषा में ऐसी शक्ति नहीं.

*****

बेटी

रचनाकार- अर्चना लखोटिया

सावन में डाली का झूला है बेटी.
उपवन में खिलता गुलाब है बेटी.
उगते हुए सूर्य की लाली है बेटी.
सन्ध्या में दिया बाती है बेटी.

आसमाँ में टिमटिमाता तारा है बेटी.
रसों में श्रृंगार सी होती हैं बेटी.
अलंकारों में उपमा सी होती हैं बेटी.
माता पिता की आन है बेटी.

भाई की राखी का मान है बेटी.
उदासी में उल्लास का संचार है बेटी.
गम की हर दवा का उपचार है बेटी.
बेटियों से ही घर की पहचान होती है.

एक-दो नही ये तीन कुलों की आन होती है.
धन्य है वह माता पिता
जिनके घर में बेटियो का हुआ पदार्पण.
बेटियों जितना भला कहाँ मिलता है समर्पण.

*****

जिनगी के जे पाठ पढ़ाथे

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

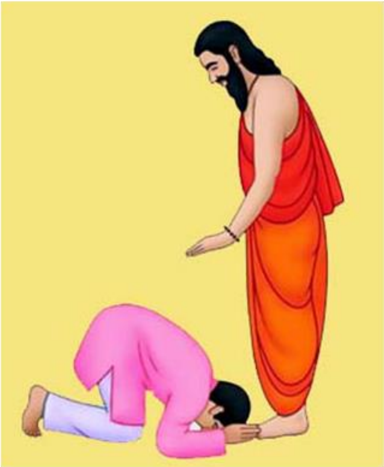

तन मन से अंधियार मिटाके हिरदे ल उज्जर करथे,
रीति धरम के दीया जलाके ज्ञान पुंज घट मा भरथे.
मरम यही मन म समेट जग नंदन करना हे,
अइसे गुरुवर के हम सब ल बंदन करना हे.

अपन शिष्य मन के अंतस ल, जेहर पल म पढ़थे.
कुम्भकार के जइसे बनथे, शिष्य हिरदे ल गढ़थे.
गुरु ह नाव खेवैय्या बन के, बेड़ापार लगाथे.
भाग्य विधाता भी गुरुवर के सोये भाग जगाथे.
खेवनहार के माथ तिलक बर चंदन करना है.
अइसे गुरुवर के हम सब ल बंदन करना हे.

मान बड़ाई नई चाहे जे, सदा समर्पण करथे.
दुनिया ल उजियार करे बर, तन मन अर्पण करथे.
जीवन भर कुटिया म रहिथे, रूखा सुखा खाथे.
लेकिन अपन विद्यार्थी ल, परम महान बनाथे.
श्रद्धा के दो फूल चढ़ा, अभिनंदन करना हे.
अइसे गुरुवर के हम सब ल बंदन करना हे.

*****

मुक्तक - हिंदी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे"कोहिनूर"

पुण्य भारत भूमि की जो,
बढ़ाती मान हिंदी है.
तिरंगे में समाहित जो,
वही पहचान हिंदी है.
जिसे कहते है हम बिंदी,
हमारी भारती माँ की.
है प्राणों से हमें प्यारी,
हमारी जान है हिंदी.

जो वेदो में पुराणों में,
ऋचाओं में समाई है.
जिसे तुलसी ने कबीर ने,
मीरा ने भी गायी है.
न जाने दूर क्यों हम हो रहे,
है आज हिंदी से.
इसी हिंदी से भारत ने,
जगत पहचान पाई है.

जो कहते है कभी आदर्श को,
हम खो नहीं सकते.
प्रदूषित जो करे मन को,
गरल वह बो नहीं सकते.
वहीं हिंदी को भूले है,
स्वयं के स्वार्थ में पड़कर.
पुत्र वो भारती माँ के,
कभी भी हो नहीं सकते.

*****

पृथ्वी

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू

थाली जैसी अपनी धरती,
सूरज का चक्कर लगाती.
एक चाँद, कई हैं तारे,
लगते हमको बहुत प्यारे.
आओ तुम्हें बताऊँ बात,
कैसे होती दिन अउ रात.
पृथ्वी धूरी पर घूमा करती,
ऐसे ही दिन व रात बनती.
जिधर सूर्य रोशनी पड़ती,
मानों उधर दिन है चढ़ती.
सब कहते हैं यही बात,
शेष जगहों में होती रात.

*****

कसरत

रचनाकार- सूर्यदीप कुशवाहा

बच्चों बोर हो जाओ,
तब घूमो नाचो गाओ.

सुबह में करो जंपिंग,
होगी खून की पंपिंग.

बच्चों खेल-कूद जरूरी,
इससे कभी न रखना दूरी.

सुबह कसरत का हिस्सा,
स्वस्थ जीवन का किस्सा.

*****

समय की कीमत

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

मधुर और भारती जुड़वा बहनें थी. दोनों कक्षा सातवीं की छात्रा थी. दोनों पढ़ाई में अच्छी थीं. एक साथ खाना, पढ़ना, खेलना-कूदना आदि. दोनों के स्वभाव में एक अंतर था. मधुर हमेशा समय का ध्यान रखती थी; परंतु भारती बड़ी लापरवाह थी. समय के दुरुपयोग की आदत पर मधुर उसे हमेशा टोका करती थी, लेकिन भारती पर कोई असर नहीं पड़ता. समय बीता. परीक्षा पास आने लगी. मधुर समय को ध्यान रख कर पढ़ाई में जुट गई. भारती खेलकूद में व्यस्त थी.परीक्षा में मधुर का पेपर अच्छा बना. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई. भारती अनुत्तीर्ण हो गयी. उसे बहुत दुःख हुआ. उसे सबक मिला. वह समय की कीमत समझ गयी.

*****

लग गई ऐसी लत

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बच्चों को मोबाइल की
लग गई ऐसी लत.
दिन रात मोबाइल की
लगा रहे हैं रट.

सुबह से ले कर रात तक
मोबाइल लिए रहते हैं.
यू टूब पर ढेर सारी
कॉमिक्स देखते रहते हैं.

पापा मम्मी इनकी आदत से
आज हैं बहुत परेशान.
कोई बच्चा मम्मी पापा का
कहना नहीं रहा है मान.

मोबाइल देखने से
बच्चे पढ़ने लिखने में हो जाते कमजोर.
मोबाइल ले लो तो
खूब मचाते शोर.

बच्चों को मोबाइल से
हमें दूर रखना होगा.
चाहे कुछ भी हो जाए
मोबाइल नहीं देना होगा.

*****

अप्रैल फूल बनाया

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

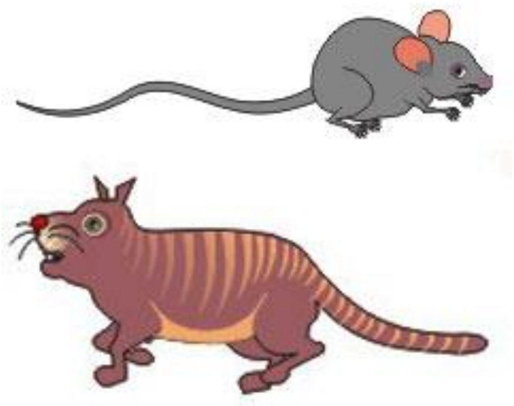

चूहे ने एक दिन बिल्ली को
अपना फोन लगाया.
फोन पर बिल्ली मौसी से
बातें सब बतलाया.

बोला चूहा मौसी जी
परसो मेरे घर आना.
मेरे जन्मदिन पर
केक मिठाई आ कर खाना.

सुन चूहे की बात
बिल्ली मन ही मन मुस्काई.
जन्म दिन की बात
अपने घर वालों से बताई.

बिल्ली पूरे परिवार के साथ
चूहे के घर जब पहुंची.
दरवाजे पर लगा था ताला
मामला क्या है न समझी.

तभी दीवार पर उसकी
नजर गई अटक.
लिखा था अप्रैल फूल है आज
जाओ घर वापस झटपट.

*****

आई गर्मी आई गर्मी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आई गर्मी, आई गर्मी,
कूलर पंखा से भागे गर्मी.
सारे गर्म कपड़ों को,
बक्से में रखो सब जल्दी.

खीर ककडी़ खरबूजा नासपाती,
खाने को लाई गर्मी.
आम लीची और पनिआला,
ले कर के आई गर्मी.

गांव शहर हर जगह,
कुल्फी आइसक्रीम की दुकान लगवाई गर्मी.
माजा फ्रुटी कोका कोला की,
फिर बाजार लगाई गर्मी.

सारा दिन सूरज की गर्मी,
सबको खूब जलाई गर्मी.
बहे बदन से खूब पसीना,
देखो देखो आई गर्मी.

*****

खेल खेल में पढ़बो अउ सिखबो

रचनाकार- ऋषि प्रधान

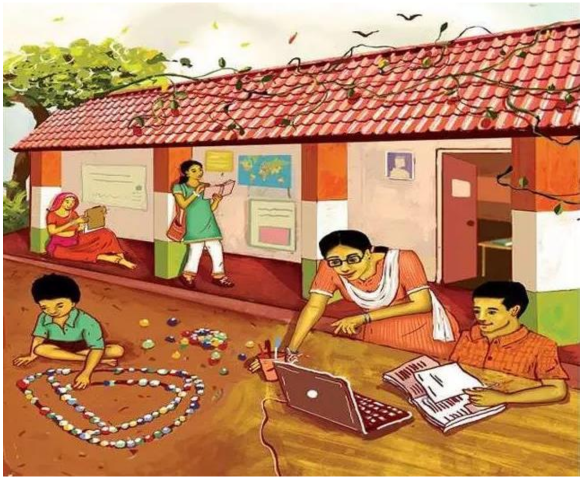

जम्मो दिन स्कूल जाबोन हमन,
अब्बड़ एकन पढबो हमन.
नवा नवा ज्ञान पाबो आउ,
जिनगी ला गढ़बो हमन.
हमर गुरुजी हर हमर बर,
नवा नवा चीज बनाए हे.
खेल खेल में सिखबो हमन अब,
हमर मन हर आय हे.
का हाथी का घोड़ा अउ
कतका जिनिस बनाय हे,
हमर स्कूल मा जम्मो बर
अब्बड़ खिलौना आय हे.
कोरोना में हो गय रहीस पढ़ाई ह ठप,
अउ सब चीज ला लकाय भुलाय हे.
तेकरे सती सरकार हर
खिलौना ला बिसाय हे.
जम्मो पढ़बो अउ अफसर बन जाबोन,
घर मा घलु हमन नवा खिलौना बनाबोन.

खेल खेल मा सीख के
सुघ्घर डहर ला जाबोन,
दाई ददा अउ गुरुजी मन के नाम ला,
अब्बड़ अकन बाताबोन.

*****

फूल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

मेरे घर के लघु गमले में,
खिला हुआ गुलाब का फूल.
आसपास काँटे हैं, फिर भी,
कैसा रहा डाल पर झूल.

हँस- हँस सबको मोहित करता,
दुख का किंचित नाम नहीं.
होता नहीं उदास एक पल,
हृदय दुखाना काम नहीं.

प्यारा-प्यारा रंग गुलाबी,
मनमोहनी सुगंध है.
भौंरे- तितली रस पीते हैं,
जुड़ा प्रकृति संबंध है.

फूल हमें शिक्षा देता है,
जीवन में मुस्कान बिखेरें.
अच्छे कर्म, सुसंकल्पों से,
आशामय भविष्य को टेरें.

*****

खोलें खिड़की

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

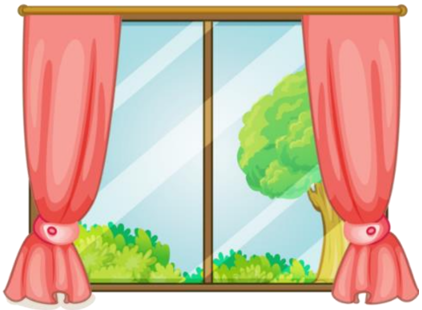

खोलें खिड़की सुबह सबेरे,
देखें बाहर मस्त नजारे,
रूप प्रकृति के कितने प्यारे.

धूप सुनहली अंदर आई,
नन्हीं बच्ची - सी शरमाई,
हवा चल रही है, सुख पाएँ,
थोड़ा टहलें, दौड़ लगाएँ.

फूल खिले हैं नव उपवन में,
रंगबिरंगे न्यारे - न्यारे.

पड़ी दूब पर ओस चमकती,
मोती जैसी खूब दमकती,
खुले - खुले मैदान में घूमें,
तरु की शाखाओं सँग झूमें.

चीं चीं चूँ चूँ गाती चिड़िया,
उड़ती फिरती पंख पसारे,
रूप प्रकृति के कितने प्यारे.

*****

तोर अँचरा के छइयाँ

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे"कोहिनूर"

मोर निंदिया बर दाई तैंहर,
रात - रात भर जागे ओ.
तोर अँचरा के छइयाँ मोला,
सरग ले बड़के लागे ओ.

तोर हाथ ल धरके दाई,
मैं रेंगे बर जाने ओ.
तोर आँखी म देख-देख,
दुनिया ल पहिचाने ओ.
तोर गोरस के अमृत हर,
मोर ये तन ल सिरझाये हे.
मोर दुलौरीन दाई तैंहर,
तोर ममता मोर मन म समाए हे.
तोर दया पाके ही दाई,
भाग ये मोरे जागे ओ.
तोर अँचरा के छइयाँ मोला,
सरग ले बड़के लागे ओ.

मोर जतन अउ मोर रक्षा बर,
कभु नहीं तै हारे ओ.
कतको गलती करें तभो ले,
निसदिन मोला दुलारे ओ.
सब देवता ल तही मनाए,
मोर बनौती बनाए बर.
अपन के गहना घलो बेच देहे,
मोला तै तो पढ़ाए बर.
अब भी ममता धार बोहत हे,
भले बुढ़ापा तोर आगे ओ.
तोर अँचरा के छइयाँ मोला,
सरग ले बड़के लागे ओ.

*****

कुल्फी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आहा! कुल्फीवाला आया,
रंगबिरंगी कुल्फी लाया.

धूम मच गयी गली-गली,
बच्चों को लग रही भली.

अम्मा! मुझको पैसे दे दो,
मेरा भी मन है ललचाया.

इसमें है काजू - बादाम,
स्वाद-सुगंध में है सरनाम.

ठंडी-ठंडी मजा दे रही,
गर्मी को है दूर भगाया.

मुँह में रखो, शीघ्र गल जाती,
दिखा-दिखाकर विभा चिढ़ाती.

खाना अधिक हैं हानिकारक,
बाबा जी ने कहा समझाकर.

*****

सूरज

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

सुबह- सुबह चमकने को,
आ जाते हो अंबर में,
तनिक नहीं आलस करते हो,
मार्च, जून, दिसंबर, मई में.

जब दिखते हो दिन कहलाता,
रात को करते हो विश्राम.

बड़ा आग का गोला हो तुम,
लगते हो बिल्कुल फुटबाल,
भरी हुई हैं गैसें तुममें,
शक्ति-ताप में मालामाल.

हरदम निकला करते लपटें,
जिनमें हैं धातुएँ तमाम.

जाने कबसे बँधी नियम में,
धरती लगा रही चक्कर,
ग्रह, नक्षत्र, चंद्रमा भी तो,
परिक्रमा कर रहे निरंतर.

मौसम का क्रम बदला करता,
वर्षा, जाड़ा, भीषण घाम.

किरणों से ही ऊर्जा पाकर,
वृक्ष बनाते हैं भोजन,
तुमको देख नियंत्रित होते,
सकल प्रकृति के आयोजन.

हमें विटामिन डी देते हो,
सौर ऊर्जा दो बिन दाम,
सूरज बाबा! तुम्हें प्रणाम.

*****

भारतीय सांस्कृति

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

किसी देश की सांस्कृतिक, साहित्यिक सभ्यता की विरासत को संजोकर रखने का काम संजीदगी, गंभीरता, सुव्यवस्था के साथ संग्रहालयों द्वारा किया जाता है वैसा शायद किसी अन्य व्यवस्था, द्वारा नहीं किया जा सकता. इसीलिए हर देश के पौराणिक, महत्वपूर्ण संग्रहालयों को सैल्यूट.

भारत आदिकाल से ही, मानव की समृद्ध, संस्कृतिक विरासत को संजोकर रखने की विशेष भूमि रही है, यही कारण है कि आज भारत में 1,000 से अधिक संग्रहालय न केवल इस सांस्कृतिक धरोहर रूपी विरासत को प्रदर्शित करने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों को शिक्षित भी कर रहे हैं.

साथियो अगर हम अगली पीढ़ियों के लिए अपनी इस अनमोल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की बात करें तो इसे संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है क्योंकि यह हमारी अगली पीढ़ियों का सवाल है. उन्हें भी अभूतपूर्व भारतीय परंपरा, संस्कृति, सभ्यता का ज्ञान होना चाहिए.

आज के डिजिटल युग में डिजिटलाइजेशन के कारण हमारी संस्कृति, विरासत, सभ्यता को सुरक्षित, संरक्षित करने में आसानी हुई है. मानवीय रूप से संरक्षित करने के अनेक खतरे और असुविधाएँ थीं. मसलन- प्राकृतिक विपत्तियों से खतरा, दीमक कीड़ों इत्यादि से खतरा, मानवीय हरकत के कारण चोरी

का खतरा हमेशा बना हुआ था. परंतु डिजिटलाइजेशन के कारण हमारी धरोहर को इलेक्ट्रॉनिक रूप से संरक्षित करने, अनेक डिवाइसेज में ट्रांसफर कर एक नहीं बल्कि एक ही सांस्कृतिक विरासत को अनेक स्थानों पर संरक्षित किया जा सकता है. जिससे यह सदियों तक सुरक्षात्मक घेरे में रहेगी परंतु उस धरोहर को फिजिकल रूप में भी सुरक्षित रखना ही है.

इसलिए संग्रहालयों की अति महत्वपूर्ण भूमिका है. संग्रहालयों की इसी विशेष भूमिका को रेखांकित करते हुए संस्कृति मंत्रालय ने 15 से 16 फ़रवरी 2022 को भारत में संग्रहालयों की पुनर्कल्पना पर पहले वैश्विक शिखर सम्मेलन का आयोजन किया है तथा नए संग्रहालयों पर डिजिटल संवर्धित वास्तविकता और वर्चुअल वास्तविकता जैसी आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित नए संग्रहालयों के निर्माण पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया है. इस ऑनलाइन वैश्विक शिखर सम्मेलन में भारत, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, इटली, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात, ब्रिटेन जैसे देशों के प्रतिभागी सम्मिलित होंगे.

दो दिनों तक चलने वाले वैश्विक शिखर सम्मेलन के विषय में संस्कृति मंत्रालय की पीआईबी के अनुसार, यह वैश्विक शिखर सम्मेलन भारत और दुनिया भर में संग्रहालय विकास और प्रबंधन के क्षेत्र से जुड़ी अग्रणी हस्तियों, इस क्षेत्र के विशेषज्ञों और पेशेवरों को एक साथ लाएगा, ताकि सर्वोत्तम तौर-तरीकों और रणनीतियों पर चर्चा की जा सके. इसमें 25 से अधिक संग्रहालय विज्ञानी और संग्रहालय से जुड़े पेशेवर संग्रहालयों के लिए नई प्राथमिकताओं और तौर तरीकों के बारे में गहन विचार -विमर्श करेंगे. ज्ञान साझा करने के परिणामस्वरूप नए संग्रहालयों के विकास के लिए एक ब्लूप्रिंट तैयार होने के साथ-साथ एक नया कार्यक्रम तैयार होगा और भारत में मौजूदा संग्रहालयों को फिर से जीवंत करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा.

आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में यह शिखर सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जो भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर देश की जनता, इसकी संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का उत्सव मनाने के लिए प्रमुख कार्यक्रम है.

शिखर सम्मेलन के बारे में केंद्रीय मंत्री ने कहा,भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की भूमि है जो मानव सभ्यता की शुरुआत से ही है. आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान, हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, सुरक्षित करने और उसे कायम रखने के लिए नए सिरे से अपना ध्यान केंद्रित करने तथा समर्पित करने पर गर्व हो रहा है. भारत के 1000 से अधिक संग्रहालय न केवल इस सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी शिक्षित करते हैं.

ऑनलाइन शिखर सम्मेलन में चार व्यापक विषय शामिल हैं-वास्तुकला और कार्यात्मक आवश्यकताएँ, प्रबंध, संग्रह (क्यूरेशन और संरक्षण के तौर-तरीकों सहित) और शिक्षा एवं दर्शकों की भागीदारी. उन्होंने कहा,पिछले वर्षों में आकर्षक प्रदर्शों और विषय-सामग्री सहित, डिजिटल, संवर्धित वास्तविकता और वर्चुअल वास्तविकता जैसी आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित नए संग्रहालयों के निर्माण पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया है. हमने मौजूदा संग्रहालयों के उन्नयन में भी काफी निवेश किया है ताकि वे नई पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बने रहें.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन और विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की भूमि है.भारत मानव सभ्यता की शुरुआत से ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की भूमि रही है. भारत में संग्रहालयो की पुनर्कल्पना पर पहले वैश्विक शिखर सम्मेलन का आयोजन सराहनीय कदम है.

*****

हवा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

दुनिया में सबसे बड़ी दौलत होती है माँ,
बच्चों की सफलता पर निःशब्द होती है माँ.

रोटी कपड़ा मकान में होती है माँ,
बच्चों का छोटा-सा आसमान होती है माँ.

क्या छांव क्या धूप होती है माँ,
ममता की मूरत, स्नेह का स्वरूप होती है माँ.

बच्चे की हर हरकत को हँस के सहती है माँ,
सुख हो या दुख हो किसी से कोई शिकायत नहीं करती है माँ.

बच्चे का पहला शब्द होती है माँ,
वो पहला निश्वार्थ शब्द सुनके कितना रोती है माँ.

दुनिया में सबसे बड़ा धन होती है माँ,
बच्चों का पेट भरके खुद भूखे पेट सोती है माँ.

माँ का स्थान पूरे विश्व में दूजा है,
माँ मन्दिर है, आराधना है, माँ पूजा है.

*****

किताब पढ़ो

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

अच्छी-अच्छी किताब पढ़ो.
नई-नई तुम खिताब गढ़ो.

भाषा,गणित,विज्ञान की.
नीति-नियम और ज्ञान की.

समय का महत्त्व बताता है.
अनुशासन का पाठ पढ़ाता है.

देती सदा प्रेम की सीख.
देती नहीं कोई तकलीफ.

किताब मनोरंजन का साधन.
जीवन भर का जुटाता धन.

साथी बना किताब जिनका.
सँवर गया संसार उनका.

*****

गौरी की होली

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

एक छोटी सी लड़की थी. नाम था गौरी. बहुत ही सीधी-सादी. गौरी किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी. वह अपनी पढ़ाई-लिखाई से ही मतलब रखती थी. जब सभी बच्चे मैदान में खेलते थे, वह कक्षा में बैठी रहती थी. सहमी-सहमी सी रहती थी. क्लास के बच्चे जब उससे बात करते , तभी वह कुछ बोलती थी. उसकी एक भी करीबी सहेली नहीं थी. छुट्टी में बच्चे जब खेलने के लिये उसे बुलाते तो वह साफ मना कर देती थी. फिर बच्चों ने भी उसे बुलाना बंद कर दिया. गौरी को अकेला रहना ही पसंद था.

एक बार गौरी बीमार पड़ गयी. उसके माता-पिता उसे लेकर अस्पताल गये. डॉक्टर ने गौरी से पूछा- "स्कूल में तुम्हारी कितनी सहेलियाँ हैं." गौरी अब भी चुप थी. फिर उसके माता- पिता ने बताया- "यह किसी के साथ नहीं खेलती. चुपचाप और अकेली रहती है." डॉक्टर ने गौरी को समझाया- "अगर तुम दूसरे बच्चों के साथ खेलोगी, तो जल्दी ही ठीक हो जाओगी. तुम्हारा इस तरह रहना ही तुम्हारी बीमारी का कारण है."

दो दिनों बाद होली का त्यौहार था. सभी बच्चे मोहल्ले में होली खेल रहे थे. गौरी खिड़की से बच्चों को होली खेलते देख रही थी; उसका भी मन होली खेलने को हुआ. लेकिन किसी से कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं हुई. वह चुप चाप देखती रही. बच्चे होली खेलते-खेलते खिड़की के पास आये. गौरी से कहने लगे कि आओ तुम भी हम लोगों के साथ होली खेलो. बहुत मजा आएगा.

गौरी एक ही बार में मान गयी. फौरन घर से बाहर आई. सबसे पहले गौरी ने सब को रंग-गुलाल लगाया. सभी बच्चों ने भी खुश होकर गौरी के चेहरे पर रंग-गुलाल लगाया. उस दिन से गौरी सबके साथ मिल-जुल कर रहने लगी. इस बार की होली यादगार रही.

*****

बसंत ऋतु

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

बसंत ऋतु जब से आयी,
उपवन सारा है महकायी.
धरा भी ओढ़ी धानी चूनर ,
पूरवा चलती सर-सर-सर.

लगने लगे आम्र बौर भी,
लताएँ सारी है झूम रहीं.
कोयल मधुर तान सुनाए,
भौरे फूलों पर है मंड़राए.

खिल रहा चहुँ ओर पलाश है,
जब से आया ये मधुमास है.
मौसम हुआ बड़ा अलबेला,
खुशियों का लगा है मेला.

कर श्रृंगार सखिया सारी,
झूले पर बैठी झूल रही हैं.
अपने मन की बतियां वे,
एक दूजे से कह रही हैं.

*****

सेवा और सम्मान

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

राजू की दादी को बीमारी ने घेर लिया था. बीमारी के कारण पास पड़ोस के लोगों ने उनके घर आना जाना बंद कर दिया. यहाँ तक कि नाते रिश्तेदारों ने भी आना जाना बंद कर दिया.

राजू अपने माता-पिता के साथ शहर में पढ़ाई करता था. बीमारी की खबर राजू के पिता को लगी, वो सपरिवार माँ को देखने गाँव पहुँचे.

राजू की दादी पलंग पर बैठी थीं. राजू दौड़ कर पैर छूते हुए दादी के गले लग गया और उनके पास बैठ गया. राजू की माँ शिक्षित गृहिणी थीं वह बच्चों को अच्छी बातें सिखाती थीं कि कभी कोई परेशान हो, कोई बीमार या असहाय हो तो उनकी मदद करना, किसी से घृणा मत करना. राजू अपनी माँ की बातों का सदैव ध्यान रखता था.

दादी अपने बेटे बहू और पोतों का व्यहार देखकर बहुत खुश हो रही थीं. राजू ने पूछा आपको क्या हुआ है दादी?

दादी ने कहा - क्या बताऊँ बेटा! मेरी बीमारी के कारण पड़ोस के लोगों ने मुझसे नाता तोड़ दिया है और रिश्तेदार भी मुझसे दूर हो गए हैं.

राजू के माता- पिता ने माँ को ढाढस बँधाते हुए कहा- माँ आप हमारे साथ चलिए हम लोग आपकी सेवा करेंगे और उपचार कराएँगे, आप जल्दी ही ठीक हो जाएँगी. आप इन बेकार बातों पर ध्यान मत दीजिये.

6 महीने तक दवा लेने से और परिवार की सेवा, प्रेम ,सम्मान पाकर दादी बिल्कुल स्वस्थ हो गई.

*****

घर स्वर्ग से सुंदर

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

एक अमरूद पेड़ पर,
रहती इक गिलहरी.
छोटा-सा शरीर उसका,
दिखती वह सुनहरी.

बच्चे उसके छोटे-छोटे,
दिखते बड़े प्यारे.
हैं वे बड़े शरारती पर,
मम्मी के दुलारे.

घास-फूस पत्ते से,
उसका घर बना सुंदर.
बच्चे बहुत प्रसन्न हैं,
घर है स्वर्ग से सुंदर.

*****

जीवन एक पाठशाला

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

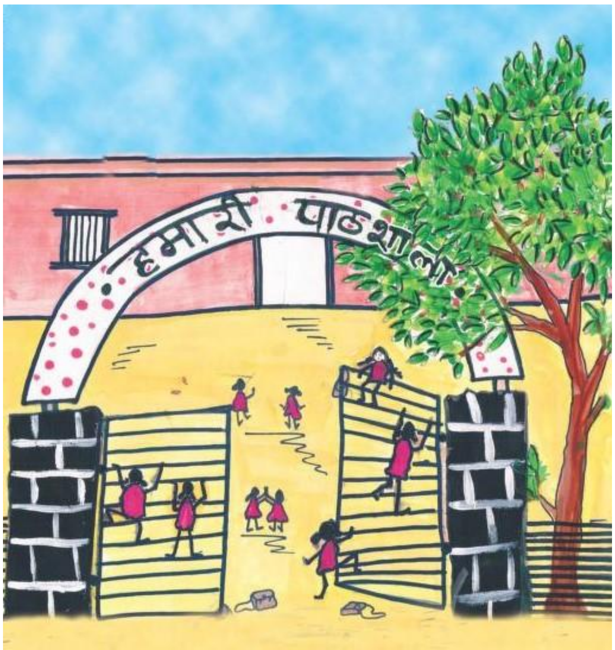

जीवन की पाठशाला में,
प्रतिदिन पढ़ाई होती है.
कोई गुरु बन देता ज्ञान,
हर क्षण कड़ाई होती है.

कोई है यहां प्रतिभावान,
जो है सबसे कुशाग्र बुद्धि.
बाकी सब कमजोर मानव,
लगे हैं अर्जित करने लब्धि.

गणित की जादुई खेल खेला,
उलझ गया चारों संक्रियाओं में.
मानो बचपन से बूढ़ा हो गया,
घिर गया सांप सीढ़ियों में.

पढ़ता गया प्राण का पहाड़ा,
गिनती की रह गई मेरी उम्र.
अंतिम संस्कार की घड़ी हो,
हाड़,मांस गल गया,उड़ा धूम्र.

कुछ सवालों के घेरे में कैद हूं,
ऊर्जा श्रृंखलाएं हथकड़ियां.
पहने हुए घूम रहा हूं मैदान में,
काला पानी की सजा बेड़ियां.

अंग्रेजी से जबान लड़खड़ाए,
परतंत्र भारत का दुःख विकराल.
बरस रहे थे कोड़े मेरी बदन पर,
डायर ने गोलियों की बिछाई जाल.

कोई कर रहा है नूतन अनुसंधान,
मानव अंगों को फाड़ कर प्रयोग.
निकाल लूंगा शरीर से आत्मा को,
आने वाली पीढ़ी करेंगे उपयोग.

मातृभाषा की बोली में मिठास है,
जन-जन की बनी माध्यम संचार.
मैं भी बोल लेता हूं टूटी-फूटी हिंदी,
आखिर सीख जाऊंगा करके प्यार.

बन ऋषि,मुनि करुं मंत्र उच्चारण,
देव वाणी से प्रगट होता भगवान.
तपस्या कर रहा हूं कंटक वन में,
मांग लूंगा सर्व सिद्धि की वरदान.

सभी विषयों का बनना होगा ज्ञाता,
तभी सफल हो पाऊंगा परीक्षा में.
पहला अध्याय आज से शुरू हुआ,
लक्ष्य हासिल करने दृढ़ हूं इच्छा में.

*****

सुरेखा

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु"

आज का दिन सुरेखा के लिए खास था. क्योकि आज उसका सम्मान होना था और मेडल मिलने वाला था. वह बहुत प्रसन्न थी. उसका वर्षों का सपना साकार हो गया था. देश की सेवा के लिए अपने आप को समर्पित करने वाली सुरेखा का आर्मी में चयन हो गया था.

सुरेखा अपने पुराने दिनों की याद करने लगी. कैसे उसने संघर्ष किया और अपना लक्ष्य पाने में सफलता प्राप्त की.

जब वह बारहवीं कक्षा में अध्ययनरत थी, तब सुबह पाँच बजे उठकर अपनी गाय बकरियों को चराने जाया करती इसी कारण वह स्कूल के प्रातःकालीन खेल-कूद अभ्यास में नहीं जा पाती थी. वह रोज देर से स्कूल पहुँचती और उसे व्यायाम शिक्षक से डाँट मिलती.

जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ. उसी की तैयारी हेतु व्यायाम शिक्षक सुबह पाँच बजे स्कूल आए. शिक्षक गाँव के गौठान से गुजर रहे थे कि उनकी नजर सुरेखा पर पड़ी. सुरेखा दौड़-दौड़ कर यहाँ-वहाँ भागने वाले मवेशियों को इकट्ठा कर रही थी. और वहीं दौड़ने का अभ्यास भी कर रही थी.

शिक्षक स्कूल पहुँचे. नियत समय पर सभी बच्चे स्कूल आए और उन्हें प्रतियोगिता में शामिल होने का निर्देश दिया गया. सुरेखा को भी प्रतियोगिता में शामिल कर लिया गया.

सभी बच्चे उत्साहित होकर मैदान में लंबी रेस के लिए खड़े हो गए.

एक लंबी सीटी बजी और दौड़ शुरू हो गई.

सुरेखा की गति धीमी थी.

तभी अचानक उसे शिक्षक की आवाज सुनाई दी

सुरेखा-सुरेखा, तेज कदम बढ़ाओ!

सुनते ही सुरेखा के पैरों में मानो पंख लग गए, पुरा मैदान

सुरेखा-सुरेखा-सुरेखा, की आवाज से गूँजने लगा.

सुरेखा दौड़ में अव्वल आई.

खेल कोटे से उसका आर्मी में चयन भी हो गया. आज वह अपने स्कूल का रोल मॉडल बन गई थी. और उसी का सम्मान हो रहा था.

*****

नहीं आती है चिड़िया

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु"

घर के चौखट में टँगी है धान की बालियाँ,
घर-आँगन सुनी है नहीं आती हैं चिड़ियाँ.

खन-खनाती झालर में लगे धान के दानें,
ज्यों का त्यों है, नहीं आती चिड़िया खाने.

अब शांत हो गया है चिड़ियों का कलरव
आँगन में बेला पुष्पित है पर छाई नीरव.

ये चिड़िया हमसे नाराज हैं,सहमी हुई है
ये चिड़िया हम लोगों से जख्मी हुई है.

ये चिड़िया हमारी हितैषी हमारी साथी है
इससे प्रकृति की उषा में खनक आती है.

चिड़ियों से प्यार करो,घर को घर बनाओ
प्रकृति गुलजार करो, इन्हें भी चहकाओ.

*****

अज्ञान ही अंधकार है

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु"

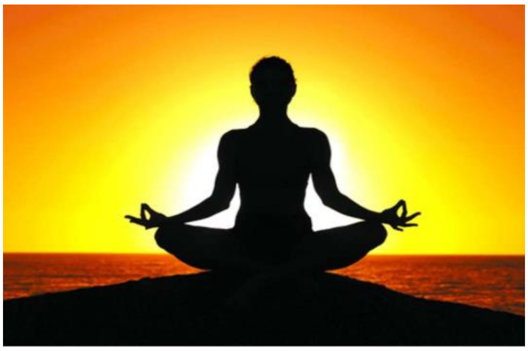

राष्ट्र की उन्नत्ति वहाँ की शिक्षा पर निर्भर करती है. बिना शिक्षा के प्रगति सम्भव नहीं है. हमारी मूलभूत आवश्यकता है शिक्षा. शिक्षा से ही हमारी दिशा-दशा और भविष्य निर्धारित होता है. इसीलिए यह कहा गया है-

"जगे देश की क्या पहचान
पढा-लिखा हो हर इंसान."

ज्ञान के बिना जीवन मे उजियारा आ ही नहीं सकता. जहाँ अज्ञान है वहाँ अंधकार होना निश्चित है. अज्ञानता के कारण हमारा समाज, पिछड़ता जा रहा है.

अज्ञानता और अशिक्षा के कारण हमारे समाज का पतन, विघटन, अपराध, जनसंख्या वृद्धि हो रही है. यदि समय रहते मानव नहीं समझता तो आने वाला समय बहुत भयावह हो सकता है.

आओ अज्ञान का
अंधियारा भगाएँ
और ज्ञान का
उजियारा लाएँ.

यह सर्वविदित है कि जिस देश की साक्षरता दर शत-प्रतिशत है, वहाँ का रहन-सहन,जीवन स्तर,अच्छा होगा.वहाँ के आर्थिक जीवन में भी बदलाव आएगा. समाज मे जागरूकता आती है. लोग अज्ञानता को अभिशाप समझने लगते हैं और अज्ञानता को दूर कर जीवन मे ज्ञान रूपी प्रकाश को लाने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं. अपने जीवन मे सुख शांति व प्रगति ला पाते हैं.

*****

ऋतु वसन्त

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

जब ऋतु वसन्त आता है
बागों में बहार आ जाता है

अमराई भी सज जाता है
आम बौरों से लद जाता है.

कोयल को यह लुभाता है
तब कोयल कुक जाता है.

कोयल वसन्त दूत बनता है
प्रकृति को सन्देश सुनाता है.

वासन्ती रंग समा जाता है
चहुँ दिसि सौन्दर्य आता है.

*****

सुग्गा - सुग्गी

रचनाकार- प्रियंका त्रिपाठी 'पांडेय'

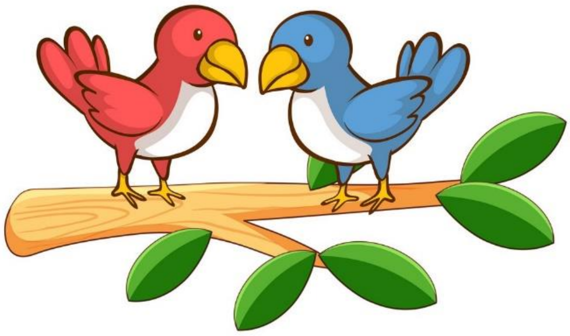

सुंदर वन मे एक पेड़ पर सुग्गा सुग्गी नामक तोते का जोड़ा रहता था. सुंदर वन अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था लेकिन इसके साथ ही वह सुग्गा सुग्गी की सुरीली आवाज और मनमोहक बातो के लिए प्रसिद्ध था. सुग्गा सुग्गी सुंदर तो थे ही वह इन्सानों की बातें समझते थे और उनके जैसा ही बोलते भी थे. सुंदर वन मे सुग्गा सुग्गी को देखने और उनसे बातें करने वालों की भीड़ लगी रहती थी.

एक बार सुंदर वन में मेला लगा. मेले में बच्चो के मनोरंजन की सारी व्यवस्था थी. तरह तरह के झूले, चाट पकौड़ी, आइस्क्रीम, खेल खिलौने की दुकानें लगी थीं. जिस पेड़ पर सुग्गा सुग्गी रहते थे उसी के नीचे एक खिलौने वाला खिलौने की दुकान लगा कर बैठा था. खिलौने बेचना तो एक बहाना था, असल मे वह दुकानदार बच्चा चोर था.

उसके मोबाइल पर किसी का फोन आया

"कहाँ हो तुम? मै सुंदर वन में खिलौने की दुकान लगा कर बैठा हूँ. अच्छा, बहुत अच्छा..सुनो मुझे पाँच बच्चे चाहिए किसी भी तरह मेरे अड्डे पर पाँच बच्चे पहुँचाओ"

जी साहब आपका काम हो जाएगा.

सुग्गा सुग्गी ने चोर की बातें सुन लीं. बिना देर किए सुग्गा सुग्गी थाने पहुँच गए.

इंस्पेक्टर से बोले "सीताराम सीताराम" हम सुंदर वन में रहते हैं. सुंदर वन में मेला लगा है, हम जिस पेड़ पर रहते हैं उसके नीचे एक खिलौने वाला, खिलौने बेच रहा है. वह बच्चा चोर है. चोर का फोन पर जो भी वार्तालाप हुआ था वह सुग्गा सुग्गी ने इंस्पेक्टर को बता दिया.

इंस्पेक्टर अपनी टीम के साथ सुंदरवन पहुँच गए और उस खिलौनेवाले पर नजर रखे हुए थे.

पाँच बच्चे एक साथ दुकान पर पहुँचे. पाँच बच्चों को एक साथ देखकर खिलौने वाले की खुशी का ठिकाना नहीं रहा. वह सोचने लगा आज तो मैं मालामाल हो जाऊँगा. उसने बच्चों को नशे वाली टाफियाँ खाने को दीं. बच्चे टाफियाँ खाते उससे पहले ही इंस्पेक्टर ने दुकानदार को धर दबोचा. इंस्पेक्टर साहब ने सभी बच्चों को सीख दी कि "किसी अनजान व्यक्ति की दी हुई चीज कभी भी नही खाना" बच्चों ने इंस्पेक्टर साहब से वादा किया "हम कभी किसी अनजान की दी हुई कोई चीज नही खाएँगे".

बच्चो क्या तुम्हें पता है कि तुम्हें किसने बचाया?

तुम्हें सुग्गा सुग्गी ने बचाया है सुग्गा सुग्गी ने हमे पहले ही सूचना दे दी थी जिसकी वजह से हम तुम्हें बचा पाए हैं.

उस दिन से सुग्गा सुग्गी बच्चों के हीरो हो गए.

*****

सर जगदीश चंद्र बसु

रचनाकार- सागर कुमार शर्मा

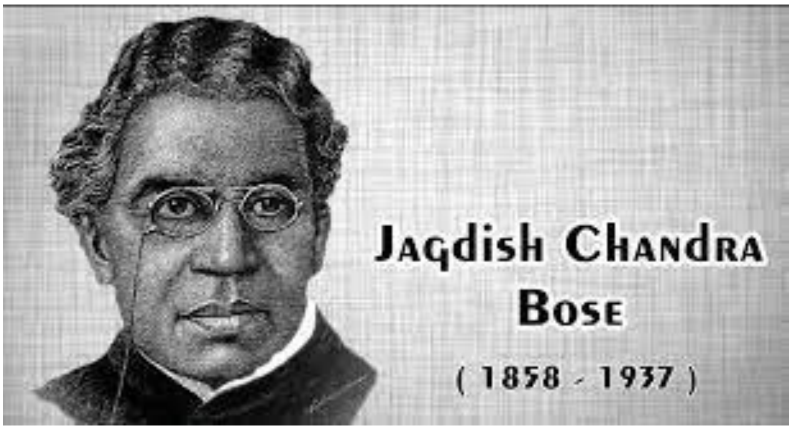

अविभाजित भारत में जन्मा,
प्रखर बुद्धि वाला एक लाल.
विश्व प्रख्यात बन वैज्ञानिक,
कर दिखाया जिसने कमाल.

बांग्लादेश का ढाका कभी,
विक्रमपुर होता था नाम.
भगवान सिंह बसु के गृह में,
जन्म लिए जो ललित-ललाम.

अट्ठारह सौ अनठावन की,
तीस नवंबर की वह बात.
जगदीश चंद्र बसु था आया,
मिला देश को यह सौगात.

पिता डिप्टी कलेक्टर जिनको
रहा मातृ भाषा से प्यार.
मिला विरासत में सुत को भी,
देश-प्रेम भाषा-संस्कार.

हुए बहुमुखी प्रतिभाशाली,
जीव वनस्पति भौतिक ज्ञान.
गहन अध्ययन पुरातत्व का,
लेखक बने अतुल संज्ञान.

शोध कार्य था किया अनवरत,
समय बना जिसकी पहचान.
मिला विज्ञान घना कोष है,
जगदीश चंद्र का अवदान.

बन रेडियो के अविष्कारक,
जनक कहाते वही अनूप.
श्रेय उन्हें पर मिल न पाया,
मिला मारकोनी को रूप.

वर्तमान संचार प्रसाधन,
है कृतज्ञ भारत के पूत.
सदा रहे अग्रणी जगत में,
बन विज्ञान के अग्रदूत.

मछुवारे और किसानों के,
पुत्र बने सहपाठी मित्र.
शिक्षा बनी सहकारिता ही,
समदर्शी उर भाव सुचित्र.

थे जिज्ञासु वृत्ति के स्वामी,
प्रकृति का अनसुलझा सवाल.
सतत खोज कर किया चकित जग,
शास्त्र वनस्पति मर्म मिसाल.

उच्च-ज्ञान विज्ञान अध्ययन,
लंदन से करके संधान.
बने भौतिकी के अध्यापक,
विद्यालय में देते ज्ञान.

भेदभाव होता वेतन में,
देख किया था विकट विरोध
किया कार्य अवैतनिक जिसने,
आर्थिक संकट सह गतिरोध.

अंग्रेजी शासन से इनको,
नाइट की थी मिली उपाधि.
रायल सोसायटी लंदन से,
चुने गए फैलो विद्यादि.

पौधों में उत्तेजना नित्य,
होता विद्युत-का संचार.
मौसम परिवर्तन का जिस पर,
होता है प्रभाव साकार.

पाई डाक्टरेट की उपाधि,
लंदन दिया विषय विज्ञान।
जग को यह बतलाया जिसने,
पेड़ों में भी होते प्राण.

अदभुद् विषय सूक्ष्म- तरंग का,
हमें दिया अनुपम पैगाम.
पराबैंगनी रश्मि-रिसीवर,
गैलेना क्रिस्टल ले काम.

विश्व प्रेरणा लेते जिनसे,
भारत के सपूत वरदान.
अमर अन्वेषण के प्रभु बने
स्वर्ण लेख इतिहास बखान.

सन उन्नीस सौ सैंतीस को,
तेइस नवंबर गए प्राण.
हुआ प्रखर वैज्ञानिक बनकर,
करे शोध से जन कल्याण.

अमर हुआ इतिहासी जग में,
जगदीश चंद्र बसु का नाम.
जय-जय भारत के श्रेष्ठ-रत्न
सागर करता तुम्हें प्रणाम.

*****

धरती कहे पुकार के

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

धरती कहे पुकार के,
अपनी हर संतान से.
तुम सब मेरी संतान हो,
रहो सदा प्यार से.
जीत लो दिल सबका
प्रेम,आदर,सम्मान से.
मुक्त रखो सदा
अपने मन को अभिमान से.
धरती कहे पुकार के,
अपनी हर संतान से.

जवाबदेही तय करो,
भागो मत कर्तव्य से.
जो भी कर्म करो,
करो सदा सही मंतव्य से.
बात को समझा करो
तर्क, ज्ञान, विज्ञान से.
धरती कहे पुकार के,

अपनी हर संतान से .

चाटुकारी करना नहीं,
जीना सदा स्वाभिमान से.
धर्म पूर्वक सभी,
कर्म करो नम्र भाव से.
मुक्ति पा लोगे तुम,
जीवन में सभी अभाव से.
धरती कहे पुकार के,
अपनी हर संतान से .

कर दो मुझे हरा भरा,
अपने लगन परिश्रम से .
मैला ना करो उसे,
प्यास बुझती है जिस जल से.
दम घुटने ना पाए,
भविष्य का दूषित पवन से.

धरती कहे पुकार के,
अपनी हर संतान से .
बचाओ मेरे कोख को,
पोषण पाया तुमने जिससे.
छलनी ना करो सीने को मेरे,
युद्ध, बम, बारूद से.
अमन, प्रेम,भाईचारे का,
करो प्रचार शुद्ध मन से.
धरती कहे पुकार के
अपनी हर संतान से .

माँ हूं मैं, मुझे लाल ना करो,
एक दूजे के रक्त से.
कुछ तो सबक लो मेरे बच्चों,
गुजरे हुए विनाश से.
खिलवाड़ ना करो तुम,
अपने बच्चों के भविष्य से.

*****

INDIA

Dr. Madhvi Borse

India is a great Nation not because it is our country India is a great because of its beauty of diversity

With several customs and traditions.

India is world's oldest growing civilizations and now it is a fastest growing country.

India has the largest democracy in the world.

The prominent political parties in India are BJP, indian National Congress, SP, BSP, CPI and AAP.

It has brought the world diverse languages and cultures.

India is the birthplace of Ayurveda,Yoga,Natural beauty and talented Artists.

Zero, Decimals, Calculus, Algebra,Trigonometry like many more gift given to the world by India.

For our country we have numerous vision,

We are proud to be an Indian.

*****

Alphabet poem

रचनाकार- उत्कर्ष चन्द्राकर, कक्षा 3, दुर्ग

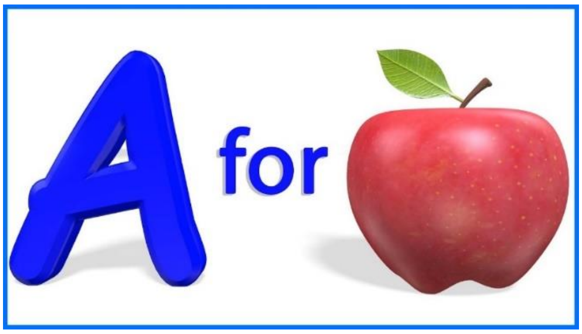

A for apple,B for ball,
C for cat, D for doll.
E for elephent, F for fox.
G for goat, H for horse.
I for inkpot, J for jump.
K for kite, L for lamp.
M for monkey, N for nest.
O for orange,P for pest.
Q for queen, R for rain.
S for sun, T for train.
U for umbrella, V for van.
W for wool, X for xrays.
Y for yat, Z for zink.
They are English learning link.

*****

विश्व महिला दिवस

रचनाकार- ऋषि प्रधान

नारी होती है घर का मान,
करें हर जगह उनका सम्मान.
नारी माँ, बहन, दादी का रूप होती है,
नारी देवी का समरूप होती है.
नारी का सम्मान हर रोज होना चाहिए,
नारी का अस्तित्व कभी न खोना चाहिए.
नारी चाहे तो आसमान छू सकती है,
नारी को अवसर समान मिलना चाहिए.
क्या संसद, क्या खेल जगत में नाम हो,
नारी पर हम सबको अभिमान हो.
नारी ही क्यों हर कुप्रथा की बलि चढ़ जाती है?
हमें सोचना होगा क्या नारी को समानता से जीने का अधिकार समाज में दी जाती है?
हर बार पर्दे के पीछे नारी ही क्यों रहे?
हर बार हर पीड़ा को नारी ही क्यों सहे?
दहेज प्रथा के नाम पर नारी की बलियां क्यों दिए जाते हैं?
सीखना होगा बस्तर से हमको जहां नारी के घर वर विदा होकर आते हैं.
बालिका पढ़ेगी,विकास गढ़ेगी इसको अब अमल करना होगा.
समाज में हर महिला को शिक्षा से सफल करना होगा.
माँ, दादी और बहन का जो घर में आदर सत्कार है होता,

क्या कमी रह जाती है पुरुष के आचरण में की बाहर वो आपा है खोता.
हर रोज शहर में अब चीर हरण भी होते हैं,
जब हम अपने घरों में चैन की नींद सोते हैं.
समाज में व्याप्त कुरीति को भी अब
हमें बदलना होगा.
नारी कह सके बेझिझक अपनी बात ऐसा माहौल देना होगा.
8 मार्च को ही क्यों बल्कि हमको हर रोज महिलाओं का आदर करना होगा.

*****

होली और रंग

रचनाकार- ऋषि प्रधान

होली आयी, होली आयी,
रंगों का मेला है लायी.
जात-पात से ऊपर उठकर,
सबके मन को है ये भायी.
बुराई पे अच्छाई के,
जीत का ये पर्व है भाई.
सभी दोस्त आये हैं घरों को
सबके मन में खुशियां समाई.
बाला,राजू,मोनू,सोनू भी आये हैं,
साथ में अपने वे कई रंग लाये हैं.
कोई लाल, कोई पीला, रंग से सब सरावोर हैं,
रंगों का त्योहार है और गुलाल चारों ओर है.
आम का भी पहला फल हम इन्हीं दिनों में खाते हैं,
गाँव के सभी गलियों में फाग गीत भी गाते हैं.
होली का ये पर्व है रंगों से हम सब नहाते हैं,
एक दूसरे से मिलते हैं और रंग खूब लगाते हैं.

*****

नारी शक्ति है

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

कोमल और शक्तिशाली भी हो,
नारी तुम हो सृष्टि की अवतारी.
घोर तिमिर में दिव्य प्रकाशमयी,
त्रिदेव सावकों के तुम महतारी.

श्रद्धा और भक्ति के प्रतिरूप,
त्याग और समर्पण की देवी.
रूप-रंग सौंदर्य की अधिष्ठात्री,
निश्छल प्रीति पतिव्रता सेवी.

देवी अन्नपूर्णा और लक्ष्मी स्वरूपा,
कुटुंबियों की करती उदर पोषण.
सरल स्वभाव माधुर्य भाव लिए,
नीरवता से सहन करती शोषण.

अब बन जाओ महारानी लक्ष्मी बाई,
अंग्रेज रूपी ससुराल की करो दमन.
प्राणेश हिटलर को करो सम्मोहित,
तब होगा तुम्हारे जीवन में अमन.

सीखना होगा तुम्हें युद्ध कौशल को,
जीवन भर होती रहोगी प्रताड़ित.
साहस से हुंकार भरो आततायी को,
अंगों में प्रवाह करो चालक तड़ित.

निराशा छोड़ तुम आशा बन जाओ,
गंगा की शीतल निर्मल धारा समान.
मन की निर्बलता को दूर भगाओ,
तुम्हें पाना ही होगा वापस सम्मान.

बन सैनिक रण में जूझने के लिए,
शांति पताका हाथ में लिए चल तू.
मत कर हमला पहले धीरज रख,
उष्ण और आर्द्र परिवेश में ढ़ल तू.

तू साध्वी है पवित्र मन से,तन से,
ईश्वर की पूजा से मिलेगा वरदान.
जो तुम्हें समझते हैं निरीह प्राणी,
एक दिन वक्त,जवाब देगा इंसान.

युग बदलेगा,बदलेंगे लोगों की सोच,
वक्त सबका आता है आएगा तुम्हारी.
तब तक वनिता रण की करो उपक्रम,
जीत-जीत सोचो मत बैठो मन हारी.

अंधेरी रात में निकलोगी बनके बेगम,
डर से थर-थर कांप भागेंगे दुष्कर्मी.
संहार करने तैयार रखना कृपाण को,
सर्वत्र तितर-बितर हो जाएंगे अधर्मी.

*****

गरमी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

आगी बरसावत हे सुरुज बबा हा,
चारों मुड़ा घाम.
तात तात हवा चलत हे,
कइसे करबो अब काम.

झाँझ धर के गरमी आगे,
जाड़ हा भाग गे तैहा.
रुख राई के पत्ता अइलागे,
खोजत हे सब छइहाँ.

बूड़े हावय लइका मन तरिया मा,
लेथे गरमी के मजा.
पछीना के धार बोहावत हे,
होगे सियान बर सजा.

गली गली मा कुल्फी वाला,
बेचत हे बरफ के गोला.
कोनो पीयत हे ठंडा सरबत,
कोनो हा कोकाकोला.

करसी मा भरे हे ठंडा पानी,
पी के पियास बुझावव.
गरमी बाढ़त हे अब्बड़,
जुरमिल के पेड़ लगावव.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. प्रथम हटे तो
   वन बन जाती,
   बहती हूँ चहुँओर.
   मध्य हटे तो
   पन बन जाती,
   उड़े पतंग संग डोर.

2. उस कोण की माप बताओ,
   जिसको समकोण कहते हो.
   गौर से बच्चों ध्यान लगाओ
   क्यों डरे-डरे से रहते हो.

3. ऐसा कोण अनोखा बच्चों,
   सरल कोण कहलाया हूँ.
   बच्चों मेरी माप बताओ,
   रोचकता मैं लाया हूँ.

4. 0°-90° के बीच कोण,
बोलो क्या कहलाते हैं ?
बड़ा सरल प्रश्न है बच्चों,
रोचकता हम पाते हैं.

उत्तर- 1. पवन, 2. 90 अंश, 3. 180 अंश, 4. न्यूनकोण.

*****

हम सफर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

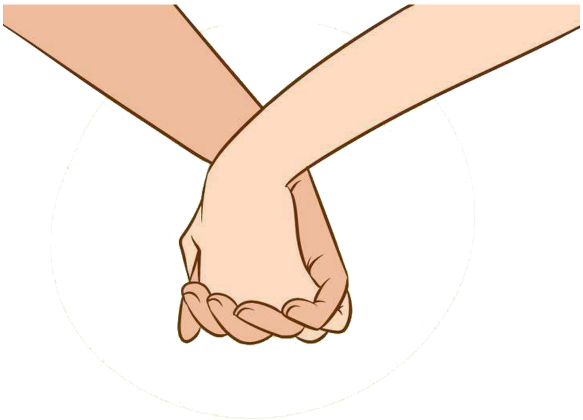

राह चले वो साथी बन कर, हर पल पकड़े हाथ.
कभी न भूले कर के वादा, सदा निभाये साथ.

जीवन को खुशियों से भर दे, बाँध प्रेम की डोर.
सुख-दुख दोनों कदम मिलाये, छूटे कभी न छोर.

सदा विश्वास रखना साथी, है छोटी-सी आस.
नयन बन्द हो जब भी मेरी, रहना मेरे पास.

रूठ गयी गर बातों से तो, देना मुझको प्रीत.
अपनी मीठी आवाजों से, नये सुनाना गीत.

छोटी-सी जिंदगी हमारी, रुक जाये कब श्वास.
इस धरती पर जब तक हम है, सदा रहे हम खास.

*****

किसान

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

बड़े बिहान ले उठ के जाथे,
खाँध मा धर के नागर.
पहिन ओढ़ के कमरा खुमरी,
ओहा खपाथे जाँगर.

लहू पसीना दिन रात बोहाथे,
काम हरे पूजा ओकर.
का जाड़ अउ का गर्मी,
सब्बो दिन हा एके बरोबर.

बादर बरसय कड़के बिजली,
करथे काम किसान.
जे कमाथे दुनिया बर,
मिलय नइ संगी ओला मान.

मुड़ भर करजा बोड़ी लदागे,
चिंता मा बदन सूखागे.
का करय किसान बिचारा,
रोवत रोवत दिन पहागे.

*****

माँ

रचनाकार- ऋषि प्रधान

दुनिया में सबसे बड़ी दौलत होती है माँ,
बच्चों की सफलता पर निःशब्द होती है माँ.
रोटी कपड़ा मकान में होती है माँ,
बच्चों का छोटा-सा आसमान होती है माँ.
क्या छांव क्या धूप होती है माँ,
ममता की मूरत, स्नेह का स्वरूप होती है माँ.
बच्चे की हर हरकत को हँस के सहती है माँ,
सुख हो या दुख हो किसी से कोई शिकायत नहीं करती है माँ.
बच्चे का पहला शब्द होती है माँ,
वो पहला निश्वार्थ शब्द सुनके कितना रोती है माँ.
दुनिया में सबसे बड़ा धन होती है माँ,
बच्चों का पेट भरके खुद भूखे पेट सोती है माँ.
माँ का स्थान पूरे विश्व में दूजा है,
माँ मन्दिर है, आराधना है, माँ पूजा है.

*****

मेरे घर में श्यामा गैया

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव

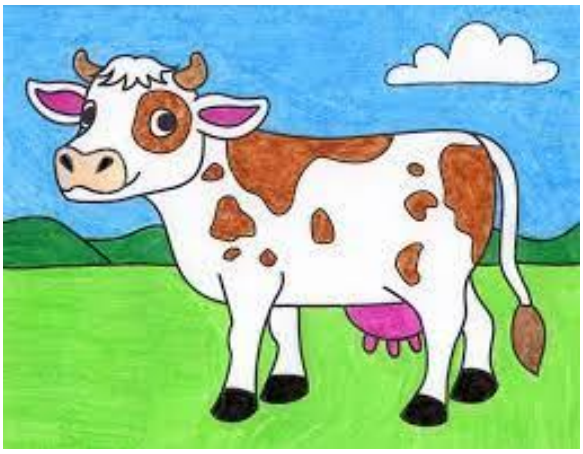

ता ता थैया ता ता थैया
मेरे घर में 'श्यामा गैया'.
और एक छोटा सा बछड़ा-
उसको कहते सभी 'कन्हैया'.

सुबह घास चरने वह जाती
देर शाम तक वापस आती
बछड़ा उसको देख रँभाता
श्यामा उसको देख रँभाती.

बछड़ा दौड़ा-दौड़ा आता
माँ के थन से मुँह चिपकाता.
पोषक व स्वादिष्ट दूध पाता
अपनी सारी भूख मिटाता.

फिर किशना काका आते
आकर श्यामा को सहलाते.
दूध निकालें, उसके थन से
माँ पकाती, हम पी जाते.

*****

अगले जनम मोहे नारी ही कीजो

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

अगले जनम मोहे नारी ही कीजो,
दोबारा मेरे माता-पिता को,
प्यारी सी बिटिया ही दीजो,
फिर चाहे हमेशा की तरह,
हर मोड़ पर, मेरी लाख परीक्षा लीजो,
फिर भी मोहे, अगले जन्म नारी ही कीजो.

खुशियों से महका दू दोनों परिवार,
देश के लिए तत्पर खड़ी रह कर करूं,
रानी लक्ष्मीबाई सा वार,
ना संहू कोई अत्याचार,
ना मानू जिंदगी से हार,
और लाऊं खुशियों की बहार.

वह सोनिया की जीत दीजो,
कल्पना चावला सा विश्वास दीजो,
वह किरण बेदी सी ताकत दीजो,
हां अगले जन्म मोहे नारी ही कीजो.

ऐश्वर्या सा आकर्षण दीजो,
पार्वती सा आदर्शन दीजो,
मदर टेरेसा सी करुणा दीजो,
मैरी कॉम सा प्रण दीजो,
अगले जन्म मोहे नारी ही कीजो.

*****

नारी शक्ति

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू "विद्या"

कुसुमलता सी नार, फूल सम कोमल नारी.
दो कुल रखती लाज, सदा बच्चों पर वारी.
रखती घर परिवार, पिरोकर जैसे माला.
मत समझों आसान, नार बन जाती ज्वाला.

प्रेम सुधा संबंध, रखो सबसे तुम प्यारा.
अपना घर और द्वार, स्नेह बंधन जग सारा.
सरल सहज सी भाव,सदा बोलो तुम वाणी.
माँ जग जननी कंठ, विराजो वीणा पाणी.

जीवन पथ का सार, सदा अपनों से कहता.
रोता जीवन देख, नीर जल आंखों से बहता.
कर्म करो तुम आज, साथ हो पावन नामा.
सादा जीवन साज,बना सुरभित निज धामा.

करें नहीं परिहास, राह नारी जो चलते.
नित्य करो सम्मान, मात आँचल तुम पलते.
जग करती कल्याण, सदा है जीवन वारी.
संग निभाओ प्रीत, वही माँ है जग प्यारी.

मानवता का भार, मात धीरज को धरना.
नारी देवी शक्ति, कर्म ही पावन करना.
दो कुल की है शान, हृदय रुचि धर अनुरागा.
प्राप्त परम आनंद, लीन मन पदुम परागा.

*****

चलो! मतदान कर आएं

रचनाकार- चेतना चितेरी

आओ, लोकतंत्र का पर्व मनाए,
वोट देकर अपना फर्ज निभाएं.

देश के प्रति हमारा भी कर्तव्य है,
चलो, हम सब मतदान कर आएं.

सारे काज छोड़ चलो, मतदान केंद्र जाये,
आपका वोट बेकार न हो, सोच समझकर मतदान कर आए

चारों ओर चेतनाप्रकाश हो,
आओ! हम अपने प्रतिनिधि को चुनकर लाएं.

भैया जी, बहन जी, भूल न जाना,
चाचा जी, चाची जी, सब साथ में आइए.
बाबूजी, अम्मा जी, चलो मतदान कर आएं.

*****

फूल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

उपवन में मुस्काते फूल
मधुर सुगंध लुटाते फूल

सुंदर रंग-बिरंगे हैं
सबको पास बुलाते फूल

प्यारी सखी तितलियाँ हैं
मधुरस उन्हें पिलाते फूल

भौंरे सुना रहे गाना
झूम-झूम इठलाते फूल

काँटों में रहकर सीखा
कभी नहीं भय खाते फूल

रूप-रंग है अलग-अलग
सबका साथ निभाते फूल

गर्मी हो अथवा सर्दी
मौसम से टकराते फूल

निज यश छटा विखेर कर
अंत समय मुरझाते फूल

*****

फोर लेन सड़क

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

सड़क के दोनो तरफ के सभी पेडों की एक बेहद महत्वपूर्ण बातचीत चल रही थी. बरगद का विशाल पेड़ बोला, तुम सब को पता है हमारे दोनों ओर फोर लेन सड़क बनने वाली है, और हम सब का अन्त होने वाला है. पीपल का पेड़ बोला हमें पता है और यह भी पता है कि सरकार दोनों तरफ की सारी जमीन खरीद चुकी है. बस एक दो दिनों में हमें काटने वाले मजदुर और ठेकेदार आ जाएँगे और हम सब को बारी बारी से काट कर जमीन पर गिरा देंगे.

पाकड का पेड बोला क्या हम सरकार के इस अत्याचार को रोक नहीं सकते?

कटहल का पेड कहने लगा हमारी क्या औकात है जो सरकार के अत्याचार को रोक सकें हमें तो हर हाल में मरना ही है.

आम, जामुन, महुआ, इमली, सागौन, शीशम आदि सभी पेड़ एक साथ बोल पड़े क्या हम अपनी सुरक्षा के लिए सरकार से नहीं लड़ सकते? आन्दोलन नहीं कर सकते?

सभी की बातें सुन कर बरगद का पेड़ पुनः बोला हम निहत्थे पेड़ों की क्या औकात है? हमारा कोई साथ नहीं देगा. मनुष्य तो स्वार्थी है उसके आगे हमारी एक नहीं चलेगी.

बरगद की बात सुनकर सारे पेड़ एक साथ बोल पडे अब हमें कोई बचाने नहीं आएगा, फोर लेन सड़क के लिए हमें मरना ही पड़ेगा.

अगले दिन ठेकेदार पेड़ काटने वाली कई मशीने और मजदूर लेकर वहाँ आ गया और मजदूरों से बोला एक सप्ताह के अन्दर सड़क के दोनों तरफ के पेड़ों को काट कर साफ कर देना होगा ताकि सड़क बनाने का काम शुरु किया जा सके. पेड़ काटने वाले मजदुरों को देखकर सारे पेड़ आँसू बहाने लगे. बारी बारी से पेड़ काटे जाने लगे. पेड़ों को कटता देख कर पेड़ पर रहने वाले पक्षी और बंदर रो रो कर मातम मना रहे थे.

*****

पुष्प प्रदर्शनी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

राजभवन में लगी हुई थी
हमने पुष्प प्रदर्शनी देखी
भाजी, शाक, फूल, फल अद्भुत
खूब बघार रहे थे शेखी

हरेक फूल नव मुस्कानों से
मनमोहक सी छटा विखेरे
जिधर देखिए, उधर थे दर्शक
स्टालों को खड़े थे घेरे

अलग-अलग किस्में गुलाब की
लुभा रहीं थीं खूब महक
डहेलिया खिलखिला रहे थे
गेंदा, लिली थे रहे लहक

बढ़िया सजे-धजे थे गमले
लगा हुआ फूलों का मेला
लोग देखकर सम्मोहित थे
भूल गए प्रत्येक झमेला

बहु फूलों से बनी थी तितली
करेले से बना मगर था
मोर की आकृति ने मोहा मन
छूकर होता अजब सा असर था

तरह-तरह की बोनसाई में
पाकड़, बरगद, पीपल, आम
गमलों में फलदार वृक्ष थे
लटक रहे फल, लगे ललाम

मोटे-मोटे बड़े-बड़े थे
कद्दू,शलजम और रतालू
आकर्षण का केंद्रविन्दु था
लैस लौह से काला आलू

हर्षित लोग ले रहे सेल्फी
फूलों और फलों के साथ
कुछ चीजों को देख रहे थे
छूकर लेकर अपने हाथ

हमने प्रदर्शनी में सीखा
फल-सब्जी गमलों में उगाना
जानकारियाँ मिलीं बहुत सी
सफल हुआ पुष्प उत्सव में जाना

*****

फूल खिलाओ

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

हँसते गाते समय बिताओ,
खुशियों के पल हरदम पाओ.
जीवन को समझो इक खेला,
इसे झमेला मत बतलाओ.

कल आएगा सुखद सवेरा,
गीत ख़ुशी के मिल के गाओ.
कोयल कुहू कुहू जाएगी,
उसको सुन्दरतम बतलाओ.

बगिया में आएगी तितली,
उस संग मिल के ख़ुशी मनाओ.
जीवन के हर कठिन समय को,
मिलजुल के सब सरल बनाओ.

तुम अपने मन की बगिया में,
शुभ विचार के फूल खिलाओ.

*****

मनचली पतंग

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

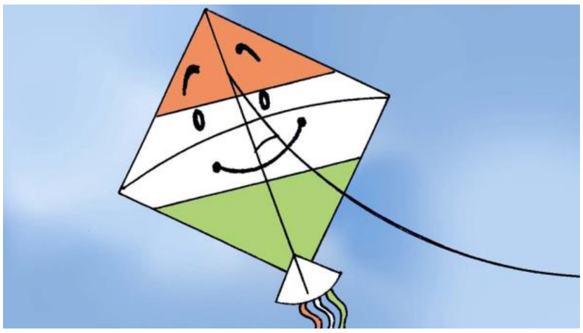

मन में भर के चली उमंग,
आसमान की गली पतंग.

हरी गुलाबी नीली लाल,
कितनी लगतीं भली पतंग.

नील गगन में गोते खाय,
कितनी हैं मनचली पतंग.

पेंच लड़ा तो दीखे दांव ,
फिर तो कट के चली पतंग.

कुछ पतंगे पूंछों वाली,
आसमान की कली पतंग.

दाएं बाएं नीचे जाय,
जैसे हो छिपकली पतंग.

बच्चो के मन को लुभाने,
ऊंचे नभ पे चली पतंग.

*****

संघर्ष जीवन का मूल मंत्र

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी

मानव जीवन में संघर्ष, मेंहनत, कौशलता यह तीन अस्त्र ऐसे हैं जो जीवन की सफ़लता के मूल मंत्र हैं इन तीन मंत्रों के बल पर हर मानव अपने जीवन रूपी गाड़ी को मंजिल तक पहुंचाने में कामयाब रहता है.क्योंकि आज के युग में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष की सीढ़ी पर चढ़ना होता है, हालांकि हो सकता है इस सीढ़ी से हम कई बार फिस्लें भी, परंतु यदि सफ़लता पाने का ज़ज्बा और जांबाज़ी है तो हमें फिसलकर फिर उठ खड़ा होकर सफ़लता की सीढ़ी पर चढ़ना होगा!!! इसे ही संघर्ष का नाम दिया गया है इससे हम ज़रूर सफलता की इस सीढ़ी के अंतिम पहिए तक पहुंचकर अपना, अपने कुल का और भारत का नाम रोशन करने में कामयाब होंगे.

साथियों बात अगर हम चींटी से मेहनत, बगुले से तरकीब और मकड़ी से कारीगरी सीखने की करें तो, नन्हीं सी चींटी महीने भर मेहनत करती है और और साल भर आराम और निश्चिंतता से अपना जीवन जीती है. बिना मेहनत के जीवन खुशहाल और निश्चिंत नहीं बन सकता ये उस नन्हीं सी चींटी के जीवन की सीख है. वैसे तो बगुले को उसके ढोंग के लिए ही जाना जाता है मगर बगुले का वह ढोंग भी मनुष्य को एक बहुत बड़ी सीख दे जाता है. रास्ते बदलो पर लक्ष्य नहीं बदलो.

कभी-कभी बहुत मेहनत के बाद भी कार्य सिद्ध नहीं हो पाता मगर वही कार्य कम मेहनत में भी सिद्ध हो सकता है, बस आपके पास उसकी तरकीब अथवा तरीका होना चाहिए. संसार में हर जीव अपने आवास और भोजन की व्यवस्था अपने ही तरीके से करता है लेकिन मकड़ियों द्वारा उनका जाल बनाना काफी रोचक और बेहद कठिन है उनसे इन इस कठिन परिस्थितियों में सफलता पाने का गुण सीखना है.

साथियों बात अगर हम संघर्ष ने मेहनत की करें तो हमारे बड़े बुजुर्गों ने हमें बार-बार समझाया है कि देखो यह चींटी कितनी बार दीवार पर चढ़ते हुए बार-बार गिरती है परंतु फिर उठ खड़ी होकर चढ़ती है इससे सीखो.वाह!क्या बात है. इतनी बड़ी विशाल मानव काया के सामने चींटी का उदाहरण संघर्ष और मेहनत के रूप में मानव के सामने सदियों से आता रहा है,जिससे हमें यह सीख मिलती है कि मानव से हजारों गुना छोटे जीव को भी नज़रंदाज़ नहीं कर उससे सीखने, प्रेरणा लेने की सोच का भाव हृदय में रखना है.यही भाव आगे चलकर मानव को महामानव के रूप में परिवर्तित करता है.

साथियो! बात अगर हम अपने जीवन में संघर्ष की करें तो नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है. मन का विश्वास रगों में साहस भरता है, चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना नहीं अखरता है. आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती.जीवन संघर्ष का दूसरा नाम हैं!!!एक बात हमेशा याद रखिए, अपनी मंजिल का आधा रास्ता तय करने के बाद पीछे ना देखे बल्कि पूरे जुनून और विश्वास के साथ बाकी की आधी दूरी तय करें बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते है.संघर्ष जीवन के उतार -चढ़ाव का अनुभव कराता है, अच्छे-बुरे का ज्ञान करवाता हैं, सतत सक्रिय रहना सिखाता है, समय की कीमत सिखाता है जिससे प्रेरित होकर हम सशक्तिकरण के साथ फिर से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होते है और जीवन जीने के सही तरीके को सीखते हैं. आगे बढ़कर भी अगर सफलता ना मिल पाई तो भी कोई बात नहीं कम से कम अनुभव तो नया होगा. बार-बार हार के भी हिम्मत के साथ अपने लक्ष्य की तरफ कदम बढ़ाना ही संघर्ष है. अपनी हर असफलता से कुछ सीखिए और निडरता के साथ संघर्ष का दामन थाम के मंजिल की ओर आगे बढ़िए.संघर्ष हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है और वो हमें सहनशील, संवेदनशील और देवतुल्य बनाता हैं.

जब तक जीवन में संघर्ष नहीं होता तब तक जीवन जीने के अंदाज को, सच्ची खुशी को, आनंद को, सफलता को अनुभव भी नहीं कर सकतें जिस तरह बिना चोट के पत्थर भी भगवान नहीं होता. ठीक उसी तरह मनुष्य का जीवन भी संघर्ष की तपिश के बिना ना तो निखर सकता है, ना शिखर तक पहुँच सकता है और ना ही मनोवांछित सफलता पा सकता है.

बात अगर हम मकड़ी से कारीगरी सीखने की करें तो यह उदाहरण भी हमें हमसे बड़े बुजुर्गों द्वारा पीढ़ियों से, दशकों से दिया जाता है कि देखो वह मकड़ी नें कैसा सुंदर आकार का जाल बनाया है, उसकी कलाकारी को देखो बस हमें आज उस मकड़ी की कला की कारीगरी को आज कौशलता का नाम देकर उसकी कारीगरी को अपने मानवीय मस्तिष्क में यह बात उतारनी है कि जब हम से हजारों गुणा छोटा

जीव इतनीं सुंदर कारीगरी कर सकता है तो हम क्यों नहीं!बस यह मानवीय सोच, मानवीय बौद्धिक क्षमता के कुछ स्तरपर बंद दरवाजों को खोलने का काम करती है और यह द्वार एक बार खुला तो फिर हुनर की लंबी उपलब्धियां हमारे पास होंगी और हम अपने कुल के साथ भारत माता का नाम वैश्विक स्तरपर ऊंचा करने में कामयाब कर सकेंगे.

बात अगर हम कौशलता की करें तो, वर्तमान समय में कौशलता या कारीगरी या हुनर का नाम हम बहुत अधिक सुन रहे हैं. कौशलता विकास का नाम भारत सरकार के करीब-करीब हर मंत्रालय के कार्यक्रम की सूची में है और एक अलग से कौशलता विकास मंत्रालय भी बनाया गया है कुछ हफ्तों से देशभर में हुनर हाटों का आयोजन कर, हर मानव निर्मित कलाओं, वस्तुओं और सेवाओं का प्रदर्शन कर उनका वैश्विक विस्तार करने की रणनीतिक तैयारी की जा रही है जिसका परिणाम हम विज़न 2047, विजन 5 ट्रिलियन डॉलर भारतीय अर्थव्यवस्था, नए भारत की गाथा, नया भारत सहित अनेक विज़न हमने तैयार करके उसपर तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं जिसका दूरगामी परिणाम हम आने वाले वर्षों में जरूर देखेंगे.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि संघर्ष जीवन का मूलमंत्र है. संघर्ष ही जीवन है. आओ चींटी से मेहनत, बगुले से तरकीब और मकड़ी से कारीगरी की प्रेरणा से सीखकर अपना जीवन सवारें तथा संघर्ष सफ़ल जीवन की कुंजी है, कल तभी अच्छा होगा जब हम उसके लिए आज़ से मेहनत करेंगे!!!

*****

ऋतु करिधाल महिला वैज्ञानिक

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

मेरा देश महान मेरा देश महान
भारतीय वैज्ञानिकों का है बड़ा योगदान,
मेरा देश महान मेरा देश महान
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
इसरो के साथ करती है वह काम
जो है देश की शान

उत्तर प्रदेश के लखनऊ में जन्मी
साहसी कर्तव्यनिष्ठ विद्वान
रितु करीधाल है उसका नाम
मेरा देश महान मेरा देश महान.

मंगलयान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
चंद्रयान-2 में मिशन निर्देशक के रूप में आई
एयरोस्पेस इंजीनियर की डिग्री
भारतीय विज्ञान संस्थान से पाई
मार्स आर्बिटर मिशन मंगलयान में
उप संचालक निदेशक की भूमिका निभाई
इसरो में 1997 से किया जिसने काम
मेरा देश महान मेरा देश महान.

चंद्रयान-2 मंगलयान में दिया योगदान
भारतीय रॉकेट वूमेन की मिली उन्हें पहचान
अलग छवि अलग ही शान
चांद पर पानी की पुष्टि व विश्लेषण करेगा चंद्रयान
मेरा देश महान मेरा देश महान.

चंद्र मिट्टी का अध्ययन रासायनिक तत्वों की पहचान
भेजा गया चंद्र में मिशन 2 चंद्रयान
इसरो युवा वैज्ञानिक अवार्ड से 2007 में
हुआ जिनका सम्मान
भारतीय महिला वैज्ञानिक ऋतु करी धाल है
उस उनका नाम
मेरा देश महान मेरा देश महान.

*****

तितली

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

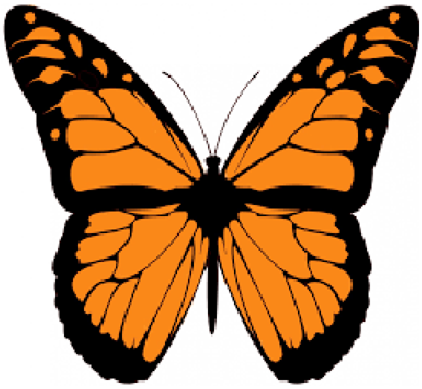

छोटी-छोटी,प्यारी-प्यारी तितली.
मन को अति भाती प्यारी तितली.

रंगो की फुलवारी तितली.
सबकी राजदुलारी तितली.

देख तुझे छूने का मन करती.
पर तू तो हम सबसे है डरती.

सबके मन को रिझाती तितली.
रंग बिरंगी सुकुमारी तितली.

बच्चो के मन हर्षाती तितली.
जीवन सरल सिखाती तितली.

इधर -उधर उड़ जाती तितली.
मस्ती में सदैव इठलाती तितली.

हाथ नहीं आती है तितली.
फुर्र-फुर्र उड़ जाती तितली.

*****

घोड़ी से बच्चा जन्मा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बहुत साल पहले मेहनगर में एक राजा रहते थे. उनका नाम अमरचन्द था. राजा की दो रानियाँ थीं. एक का नाम रूपवती और दूसरी का नाम सुन्दरलता था. राजा अमरचन्द अपनी दोनो रानियों से बेहद प्यार करते थे. मगर दोनो रानियों की आपस में पटती नही थी. छोटी रानी सुन्दरलता हमेशा बड़ी रानी रूपवती को अपने रास्ते का काँटा समझती थी, इसलिए वह हमेशा उसे अपने रास्ते से हटाने का षडयंत्र रचा करती थी. एक दिन राजा अमरचन्द ने दोनो रानियों को बुला कर कहा मैं कुछ दिनों के लिए दुसरे देश जा रहा हूँ. तुम दोनों राज्य की अच्छी तरह देख भाल करना. कह कर राजा अमर चन्द देशाटन पर चले गए कुछ दिनों तक दोनो रानियाँ अच्छी तरह रहीं. फिर एक दिन छोटी रानी के मन में विचार आया कि अगर मैं बडी रानी को जंगल भेजकर अपने सिपाही से मरवा दूँ तो मैं अकेली मेहनगर की रानी बन कर राज करूँगी.

छोटी रानी ने अगले दिन अपने एक विश्वासपात्र सिपाही को बुला कर कहा तुम आज बड़ी रानी को घुमाने जंगल ले जाओ ओर उसे वहीं जान से मारकर तुम वापस लौट आना. इस काम के लिए मैं तुम्हें पुरस्कार दूँगी. मगर जब हमारे राजा लौटकर आएँगे और बडी रानी के बारे में पूछेंगे तो आप क्या जवाब देंगी? सिपाही ने पूछा.

मैं राजा से कह दूंगी कि बडी रानी बीमार थीं और बीमारी की वजह से मर गईं. मगर तुम यह राज, राजा को कभी मत बताना वर्ना मैं तुम्हें मार डालूँगी.

छोटी रानी की बात मानकर सिपाही बडी रानी को रथ पर घुमाने, जंगल की ओर चल दिया. जंगल पहुँचकर सिपाही, बडी रानी को रथ से उतार कर बोला- आज से आपको इस जंगल में रहना पडेगा.

छोटी रानी का यही आदेश है. छोटी रानी ने आपको जान से मारने की बात कही थी मगर मैं ऐसा नही कर सकता हूँ. इतना कह कर सिपाही रथ ले कर वापस मेहनगर लौट आया.

छोटी रानी, बडी रानी की मृत्यु का समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुई. बडी रानी जंगल में एक झोंपड़ी में रहने लगी. वह जंगल के फलों को खाकर अपनी गुजर बसर करने लगी. बडी रानी गर्भवती थी. समय बीतता गया. इधर राजा अमरचन्द जब देशाटन से वापस आए तो बडी रानी की मृत्यु का समाचार पाकर बहुत दुखी हुए.

एक दिन सिपाही जब राजा के घुड़साल की सफाई करने पहुँचा तो देखा एक कपडे में लिपटा एक बच्चा एक घोड़ी के सामने पडा हुआ था. बच्चे को देख कर सिपाही राजा के पास पहुँचकर बोला महाराज गजब हो गया घुड़साल में एक घोडी ने एक बच्चे को जन्म दिया है. आप स्वयं चलकर देख लीजिए.

घोडी से बच्चा पैदा होने की खबर जंगल में आग की तरह पुरे मेहनगर में फैल गई. बच्चे को देखने के लिए नगर वासियों का तांता लग गया. राजा अमरचन्द ने बच्चे को उठाया और सिपाही को देकर बोले जब तक मैं इस बच्चे की असली मॉं का पता नहीं लगा लूँगा तब तक बच्चा तुम्हारे पास रहेगा. पूरे मेहनगर में घर घर बच्चे की मॉं की तलाश शुरू हो गई. मगर ऐसी कोई स्त्री नहीं मिली जिसने बच्चे का जन्म दिया हो.

राजा ने पूरे राज्य में घोषणा करवा दी कि जो कोई इस बच्चे की माँ का पता बताएगा उसे मुँहमाँगा पुरस्कार दिया जाएगा. एक दिन राजा घूमते हुए जंगल जा पहुँचे. वहाँ उन्हें जोर से प्यास लगी. राजा अमरचन्द पानी की तलाश में भटकने लगे. उन्हें एक झोंपडी दिखाई दी. राजा को लगा कि वहाँ पीने को पानी मिल जाएगा. राजा अमरचन्द झोंपडी के पास पहुँचकर बोले कोई अन्दर हो तो हमें पानी पिला दे मैं बहुत प्यासा हुँ.

झोंपडी के अन्दर से रानी रूपवती पानी लेकर बाहर आई.

राजा ने पानी पी कर कहा क्या मैं आप का चेहरा देख सकता हूँ?

रानी रूपवती ने अपने चेहरे से घूंघट हटा दिया. अपनी बडी रानी को देख कर राजा अमरचन्द बोल पडे तुम जिन्दा हो.

रानी रूपवती ने छोटी रानी सुन्दरलता की सारी कहानी राजा अमरचन्द को सुनाई. रानी रूपवती ने यह भी बताया कि घुड़साल में आप को जो बच्चा मिला है वह आप का ही बेटा है. मैं अपना बेटा वहाँ रख आई थी ताकि आपका बेटा आप तक पहुँच जाए.

राजा ने पूछा क्या अब तुम मेहनगर नही चलोगी? मैं मर चुकी हूँ वहाँ

जाकर क्या करूँगी? छोटी रानी मुझे जान से मार डालेगी.

बार-बार कहने पर रानी रूपवती राजा अमरचन्द के साथ मेहनगर जाने को तैयार हो गई. राजा अमर चन्द ने छोटी रानी की सारी करतूत जानने के बाद छोटी रानी सुन्दरलता को मृत्युदंड दिया. राजा अपनी बडी रानी और बेटे के साथ अपने राजमहल में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे.

*****

खरगोश

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

खरगोश चला मस्ती में,
पहुंच गया वो बस्ती में.

सभी देखने उसको लग गये,
जुम्मन जी के भाग जग गये.

जुम्मन ने सोची एक उपाय,
क्यो ना इसको पकड़ा जाय.

उसे पकड़ने दौड़ा जब जुम्मन,
खरगोश ने लिया धरती का चुम्बन.

धरती से बोला फिर खरगोश,
रख लो माँ मुझे अपने आगोश.

फिर कभी ना आऊंगा बस्ती में,
जंगल कभी ना छोड़ूगा मस्ती में.

जुम्मन के डर से खूब भागा,
थक गया वो बेचारा अभागा.

खरगोश सरपट जंगल की ओर भागा,
पहुंच गया जंगल उसकी किस्मत जागा.

*****

लक्ष्य

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

लक्ष्य भेदन हेतू एक टक जो आंख गड़ाता है,
अर्जुन सा गांडीव लेकर रन मे जो आता है.
साहस, शौर्य की ज्वाला को भरता सीने के अंदर,
हर बाजी जो मार जाता होता वही सिकंदर.

गर पाना है लक्ष्य, संयम से हमें चलना होगा,
अपने अंदर आलस से खुद ही हमें लड़ना होगा.
लक्ष्य भेदन की ललक रखता हो दिल के अंदर.
हर बाजी जो मार जाता होता वही सिकंदर.

सफलता के राहो मे बिछे है कितने शूल,
परिश्रम के पसीने से शूल भी बनते फूल.
चुनौती स्वीकार करने विश्वास हो जिनके अंदर,
हर बाजी जो मार जाता होता वही सिकंदर.

संकल्पित होकर जब लक्ष्य साधा जाता है,
सफलता का ध्येय, स्वयं दुगुना हो जाता है.
संकल्पो के श्वासों को प्रतिक्षण ले दिल के अंदर.
हर बाजी जो मार जाता, होता वही सिकंदर,

सर्वधर्म से सराबोर मेरा प्यारा है चमन,
नमन है भारत माता को जो मेरा है वतन.

वसुधेव कुटुंबकम की भाव जग को सिखलाया,
विवेकानंद जैसा धर्मस्व लाल जब माता ने पाया.
ऋषि, मुनि, ज्ञानी, विज्ञानी, से महकता मेरा है चमन,
नमन है भारत माता को जो मेरा है वतन.

साहस, शौर्य की गौरव, गाते जिनका इतिहास,
राष्ट्रप्रेम पल -पल बढ़ता है, होता कभी न हास.
देशद्रोहियो का जहां, होता सदा है दमन,
नमन है भारत माता को जो मेरा है वतन.

सर्वधर्म समभाव का भाव जग मे जगाया जिसने,
गौतम, गाँधी, नानक को गोदी बिठाया जिसने.
भारत माता के ये सभी अनरतन है रतन,
नमन है भारत माता को जो मेरा है वतन.

*****

झगरा में का राखे हे

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

अरे इंसान, मूरख नादान,
तँय अपन आप ल पहिचान.
फेर झगरा में का राखे हे,
गुरतुर गोठ बोले बर जान.

तँय झन कर गरब गुमान,
जर जाही तोर कंचन काया.
राख हो जाही तोर कड़ुवा जुबान.
फेर झगरा में का राखे हे
तँय सब ल अपन जान.

सबले मिरजुल के रहिबे,
त सबो ह तोला भाही.
थोरकिन तेंहा अंटियाबे,
सारी दुनिया बइरी हो जाही.
फेर झगरा में का राखे हे,
तँय बन सबके मीत मितान.

एक दूसर के सुख दुःख म,
परोसी, परोसी के काम आथे.
गुरतुर भाखा बोली ले,
अख्खड़ बइरी,संगी बन जाथे.

साँच के लिख ले करम कहानी,
तँय झन बन रे अभिमानी.
फेर झगरा में का राखे हे,
बन सुख दुःख के हितवारी.

एक दूसर ले मिलबो-जुलबो,
हाँसबो,मया के गोठ गोठियाबो.
मया पिरित के सुघ्घर छइहाँ म,
अपन जिनगी ल सरग बनाबो.

अइसे हितवा मितवा बन के,
संगे संग सब मिलके रहिबो.
फेर झगरा में का राखे हे,
मया पिरित के रद्दा चलबो.

चलो झगरा ल,
टाटा बॉय-बॉय कहिबो.
चलो झगरा ल,
टाटा बॉय-बॉय कहिबो.

*****

जब गधेराम आते हैं

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

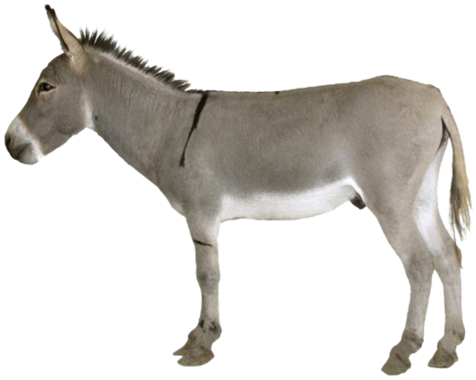

गधा बहुत सुंदर होता है,
गाता मीठा गाना.
दर्शक बड़े ध्यान से सुनते,
उसका मधुर तराना.

खच्चर हेंहों -हेंहों करके,
जब संगीत बजाता.
गधा झूमकर उचक- उचक कर,
कत्थक नाच दिखता.

घोड़े की हिन-हिन पर तो वह,
मंत्र मुग्ध हो जाता.
मार दुलत्ती सभी दर्शकों,
को वह मार भगाता.

तोते कोयल मोर सरीखे,
पंछी घबराते हैं.
रहते खड़े हाथ बांधे जब,
गधेराम आते हैं.

*****

हिंदी वाली बगिया

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

खेल चुके हो बहुत चलो अब,
खोलो जरा किताब.
दीदी बैठी, तुम भी बैठो,
क, ख, ग, पढ़ लो आज.
और पाँच तक सभी पहाड़े,
हिंदी के रट लो.
जोड़ घटाने के हिंदी में,
सारे करो हिसाब.
ए,एपिल,तो मालूम है,
अ, अनार सीखो.
हिंदी वाली बगिया को तो,
हिंदी में सींचो अ
धोती कुरता टोपी में भी,
कुछ दिन रहो जनाब.

*****

वह क्यों काटे जेब भला

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

चुरकट जी ने चोरी की.
जेब काट ली गौरी की.
गौरी जा पहुँची थाने.
थानेदार नहीं माने.
चुरकट भाग्य विधाता है.
अरबों-खरबों खाता है.
बड़ों -बड़ों को खूब छला.
वह क्यों काटे जेब भला?

*****

कथनी और करनी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

आजकल लोगों की कथनी और करनी में बहुत अंतर है. यदि लोग अपनी कथनी के अनुसार कार्य करते, तो यह दुनिया कब की बदल चुकी होती. आजकल वाट्सएप का जमाना है. मेरी एक पड़ोसन दिन भर वाट्सएप चलाती रहती है और अच्छे-अच्छे मैसेजेस भी डाला करती है.

अक्सर मैसेजेस डालती रहती है कि हमें गरीबों पर दया करनी चाहिए. भूखे को भोजन देना चाहिए. कभी किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए .

उसके इन मैसेजेस से लगता है कि वह बहुत ही दयालु प्रवृत्ति की महिला है.

एक दिन की बात है उनके घर एक भिखारी आया. वह बहुत ही दीन-हीन दिख रहा था. उसके कपड़े फटे हुए थे. मैं अपने घर की खिड़की से देख रही थी; और सोच रही थी कि मेरी पड़ोसन जरूर उस भिखारी को कुछ न कुछ देगी. थोड़ी देर बाद वह घर से निकली. भिखारी को देखते ही उसका दिमाग खराब हो गया. उसने चिल्लाकर उस भिखारी को भगा दिया. फिर फर्श पर पानी डालते हुए वह खूब बड़बड़ाने लगी- कहाँ-कहाँ से; कैसे-कैसे लोग आ जाते हैं, पता नहीं. कमाना-धमाना हैं नहीं, और भीख माँगते रहते हैं."

मैं यह सब देखकर भौचक्की रह गयी; और उसके वाट्सएप के मैसेजेस को देखने लगी. अब उन मैसेजेस को मुझे डिलीट् करना उचित लगा.

*****

दूध और रोटी

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

पालन पोषण के लिए जगत में,
दो चीजें अनमोल हैं होती.
शैशव काल में दुग्धपान और,
शेष उम्र दो वक्त की रोटी.

सारी पीड़ा सहकर जब भी,
माता संतान को जनती है.
भूख शिशु की सबसे पहले,
दूध से अपने मिटाती है.

रोटी की भी महिमा भारी,
इसको पाने सब कष्ट सहे.
खून जलाकर मेहनत करते,
तभी मिले जब स्वेद बहे.

दूध का प्रभाव है इतना,
जब भी कभी दुश्मन ललकारे.
छठी का दूध याद दिलाकर,
वीर सदा स्वाभिमान निखारे.

सहज सुलभ होती गर रोटी,
सुननी न पड़ती खरी या खोटी.
न होती हिंसा इस जग में,
नहीं काटते अपनों की बोटी.

दूध सदा से ही गुणकारी,
मां का हो या भैंस-गाय का.
रोटी की संख्या है बताती,
समृद्धि आपकी, स्रोत आय का.

*****

गणित

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

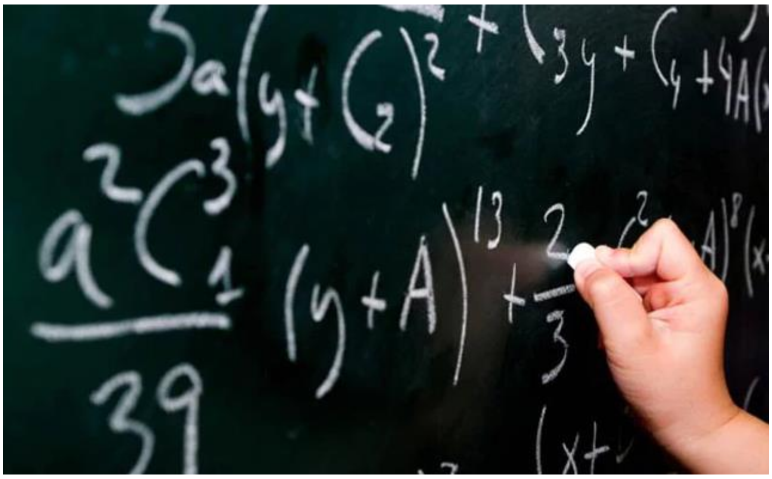

अम्मा! मुझको गणित सताए,
कौन समस्या को सुलझाए?

याद कर लिया सौ तक गिनती,
आगे कठिन, करूँ मैं विनती.
सुबह-शाम रट रहा पहाड़े,
गुल्ली-डंडा बहुत चिढ़ाए.

छोटा-मोटा जोड़-घटाना,
गिन-गिन उँगलियों से जाना.
गुणा-भाग है अजब पहेली,
शुरू करूँ तो सिर भन्नाए.

उलझा हुआ भिन्न का चक्कर,
बार-बार लेता हूँ टक्कर.
अंश और हर नहीं बराबर,
कैसे उनको सरल बनाएँ?

रेखागणित बहुत भटकाती,
बिंदु, भुजा, रेखा उलझाती.
कर प्रयोग परकार-पेंसिल,
कोण बनाना समझ न आए.

*****

नानी माँ

रचनाकार- लवली यादव, कक्षा- 11 वीं, शा. उ.मा. वि. पहंडोर

नानी मेरी, सबसे प्यारी
रोज कहानी सुनाती है.
राजा और रानी की बातें बताती है.
आँगन में सुलाते-सुलाते,
सपनों की सैर कराती है.
उनके हाथ के बने अचार,
मेरे मन को भाते हैं.
रोज सवेरे जहाँ कहूँ मैं,
नानी वहीं ले जाती है.
पीपल के पेड़ पर,
रोज झूला झूलाती है.
चोट लग जाए कहीं मुझे तो,
उनकी आँखें भर आती हैं.
नानी मेरी सबसे प्यारी,
रोज कहानी सुनाती है.

*****

मेरी गुड़िया

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

मेरी गुड़िया बहुत प्यारी,
सबसे सुंदर और निराली.
भूरे-भूरे बालों वाली,
नीली-नीली आँखों वाली.
मेरी गुड़िया बहुत प्यारी,
सबसे सुंदर और निराली.

गोरे -गोरे उसके हैं गाल,
नरम -नरम उसके हैं हाथ.
होठों पर लाली लगाई,
सिर पर डाली लाल चुनरिया.
मेरी गुड़िया बहुत प्यारी,
सबसे सुंदर और निराली.

हाथों में है रंग- बिरंगी चूड़ियाँ,
गलों में है मोतियों की माला.

यूँ पलक खोलती और बंद करती,
बड़ी सुंदर और वह लगती.
मेरी गुड़िया बहुत प्यारी,
सबसे सुंदर और निराली.

दिन भर मैं उससे खेलूँ,
फिर भी वह मुझसे न रूठती.
हरदम वह खुश ही रहती,
और सभी को खुश है रखती.
मेरी गुड़िया बहुत प्यारी,
सबसे सुंदर और निराली.

*****

खुराफ़ात करने का मन करता है

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

कुछ -कुछ चीजों को तोड़ने, कुछ को जोड़ने का मन करता है.
खंभे पर लटकते बल्ब को, गुलेल से फोड़ने का मन करता है.
गाँव की छोटी नदी के टूटे पुल को, जोड़ने का मन करता है.
पेड़ों पर उछल-कूद करते बंदरों को, छेड़ने का मन करता है.
दिन भर कुछ-कुछ खुराफ़ात, करते रहने का मन करता है.

तालाब के उथले पानी में, गोता लगाने का मन करता है.
जामुन की ऊँची टहनियों पर, चढ़ जाने का मन करता है.
स्कूल से अपना बस्ता लेकर, भाग जाने का मन करता है.
दोपहरी की तेज धूप में, फुरफुंदी पकड़ने का मन करता है.
दिन-भर कुछ-कुछ खुराफ़ात करते रहने का मन करता है.

ऊँचे-ऊँचे आसमान में चलकर, सैर करने का मन करता है.
बादलों को तोड़कर, सतरंगी रंग भरने का मन करता है.
पंछियों के संग नीलगगन में, उड़ जाने का मन करता है.
रात में टिमटिमाते तारों को, तोड़ लाने का मन करता है.
दिन भर कुछ-कुछ खुराफ़ात, करते रहने का मन करता है.

*****

नानपन के बात

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

कतका सुग्घर लागय हमला, जब रहेन हमर गाँव म.
छू- छूवऊल खेलंन संगवारी, ओही पीपर के छांव म.

मालती, अनिता, फूलबई, संजू, पुष्बा अऊ सतवंतीन.
पारा के जम्मो संगी जऊरिहा अउ झगरहिन भगवंतीन.

एक दिन के बात आय,जम्मो संगवारी एतितेती लुका गे.
खोजत खोजत गिर घलेव,त मोर माड़ी ह घलो छोलागे.

रोवत रोवत माड़ी के पीरा म, दाम देवई ल घलो भुला गे.
ओतके बेखत मोला खोजत खोजत हमर बबा घलो आ गे.

संगवारी मन लुकाय रहय तेमन ल, बिना बताय घर भागें.
मोला अगोरत अगोरत संगवारी मन ल, बनेच मुंधियार होगे.

बिहानदिन बलदा लेहे बर, मोला जमो झन घेर डारिन.
आज ल बिन बताय झन जाबे कइके कुचरकुचर के पीट डारिन.

गुन गुन के नानपन के बात, मोला अब्बड़ हास्सी घलो आथे.
कतेक सुग्घर नानपन के दिन रहय, संगी मन के अब सुरता आथे.

*****

इम्तिहाँ का है डगर

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे

इम्तिहाँ का है डगर, बढ़ने से तू न डर.
जीतने की जिद कर, भिड़ने से तू न डर.

मुश्किलों का दौर है यहाँ,
हौसलों से जीतेगा जहाँ.
सागर से सीखकर, जीवन को दे लहर.
जीतने की जिद कर, भिड़ने से तू न डर.

ये चाँद, सूरज और सितारे,
जीवन सीख हैं हमारे.
तारों को खींचकर, ले आओ जमीं पर.
जीतने की जिद कर, भिड़ने से तू न डर.

खुला गगन होकर मगन,
जी भर के उड़ ले जहाँ.
आत्मबल से बढ़, समता का अवसर.
जीतने की जिद कर, भिड़ने से तू न डर.

*****

वक्त तो सबका आता है

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

वक्त तो सबका आता है,
अनेक मुश्किलें भी लाता है.
पर कोई बिखर जाता है,
तो कोई निखर जाता है.

कोई बिगड़ जाता है,
तो कोई सुधर जाता है.
कोई दर्द में रोता है,
तो कोई हँसता और हँसाता है.

कोई रुक जाता है,
तो कोई चलता चला जाता है.
कोई भूत में उलझा रहता है,
कोई भविष्य बनाता है.

कोई अंधेरे में खो जाता है,
कोई सितारों की तरह जगमगाता है.
कोई नासमझ बनता है,
तो कोई समझदार बन जाता है.

कोई बीते वक्त को भूल नहीं पाता,
कोई कल की योजना बनाता है.
वक्त तो सबका आता है,
अनेक मुश्किलें भी लाता है.

कोई बिखर जाता है.
कोई निखर जाता है.

*****

मोर स्कूल सुघ्घर

रचनाकार- ऋषि प्रधान शिक्षक

मोर स्कूल अब्बड़ सुघ्घर हे,
अब्बड़ अकन सुंदर हे.
घर मे तो हमन रईथन लेकिन,
स्कूल हर का घर ले कम हे.
मोर स्कूल में टीवी हे, अउ घलु कम्प्यूटर हे.
पानी पिये बार आरओ हे, अउ घलु तो फ्रीजर हे.
मोर स्कूल हर अब्बड़ एकन सुघ्घर हे.
रोज स्कूल जाथन हमन हर,
अब्बड़ एकन पढ़थन हमन हर.
हमर स्कूल के बगीचा ले, मीठा फल घलु खाथन हमन हर.
हमर गुरुजी हर स्कूल ला, अब्बड़ एकन सजाय हे.
लइका मन खेलही कुदही करके, अब्बड़ खिलौना लाय हे.
रंग बिरंगा चित्र बना के सबो दीवाल पुतवाय हे.

*****

कागज का टुकड़ा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल"

रमेश बेरोजगारी व अपने घर की गरीबी से बहुत ही परेशान रहता था. आखिर क्यों नहीं कॉलेज की पांचों कक्षाएं पढ़ने के बाद बी.एड.भी कर लिया था. उसके गरीब मजदूर पिता को उन पर बहुत ही आशा और विश्वास था. जिसने मजदूरी करके रमेश को यहां तक पढ़ाया था.घर मे मात्र 2 एकड़ खेत और पांच लोगों का पेट,घर मुश्किल से चलता था.

पढ़ाई पूरा करने के बाद रमेश भी अपने पिताजी के काम में हाथ बटाता था, रोजी मजदूरी करके घर के आय में वृद्धि कर लेता था.

रमेश खाली समय में अपने डिग्रियों को पलट-पलट कर देखता और अपने तकदीर को कोसता. आज भी रात में खाना खाने के बाद अपने फाइल को निकालकर अपने सभी प्रमाण पत्रों को उलट-पलट रहा था कि उसका ध्यान रोजगार पंजीयन कार्ड पर गया जिसका नवीनीकरण का कल अंतिम दिन था.झट से उठा और अपने पिताजी को बताया कि कल जिला रोजगार कार्यालय जाना होगा नवीनीकरण के लिए पिता ने हामी भर दिया.

सुबह उठकर रमेश घर के कामों को निपटाकर, स्नान भोजन करके अपने घर की एकमात्र साइकिल लेकर 30 किलोमीटर शहर निकल गया.जहां कतार लगकर अपने कार्ड को नवीनीकरण कराया. 3 बज गया उसे भूख लगने लगी. पिताजी दस रुपए नाश्ते के लिए दिए थे. अपने जेब को टटोलते हुए होटल पहुँच गए और वेटर को आवाज लगाकर एक प्लेट भजिया व एक हाफ चाय मंगाया.वेटर कुछ देर में उसे कागज की पुड़िया थमा दिया. रमेश एक-एक दाना को बड़े चाव से खाने लगा कब खत्म हुआ पता नहीं चला, फिर बड़े आराम से कागज की पुड़िया को फैलाकर पढ़ने का प्रयास करते हुए चाय पीने लगा.

पढ़ते-पढ़ते उसका ध्यान एक विज्ञापन पर चला गया, जिसमें व्याख्याता का विज्ञापन निकला था. फिर फटाफट चाय पीकर घर आगया.शाम हो गई थी.

रात में सब एक साथ खाना खाने बैठे थे. रमेश सारी जानकारी अपने पिताजी को बताया और फार्म तथा फ़ीस के लिए 500 रुपये की व्यवस्था करने कहा,पिताजी ने हामी भरी.दूसरे दिन रमेश फार्म भरकर पोस्ट किया.कुछ दिन इंतजार के बाद उसके बाद एक लिफाफा आया, जो उसकी नियुक्ति पत्र था, उसकी नियुक्ति एक हाई स्कूल में अर्थशास्त्र के व्याख्याता पद पर हो गई.

रमेश आज तक होटल में मिले उस कागज के टुकड़े को सम्हाल कर रखा है जिसने उसकी तक़दीर बदल दी. अस्तित्व के हर तत्व का सम्मान करना चाहिए,पता नहीं कौन सा टुकड़ा हमारे काम आ जाये.

*****

मेरी दादी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल'

बड़ी भली है मेरी दादी.
जितनी सीधी उतनी सादी.

रोज सुनाती मुझे कहानी.
जिसमें होते राजा-रानी.

कभी सुनाती चतुर सियार.
ताकि बनूँ बड़ा होशियार.

कभी सुनाती जंगल का शेर.
साहस आ जाए मुझमें ढेर.

कभी सुनाती चोर-सिपाही.
बन जाऊँ मैं सच्चा राही.

ज्ञान मुझे देती बुनियादी.
बड़ी भली है मेरी दादी.

*****

सूरज निकला

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल'

सूरज निकला पूरब की ओर.
फिर से हो गई नूतन भोर.

चमक उठी अब दशों दिशाएँ
जड़-चेतन आनंद विभोर.

नीड़ से बाहर हुए परिंदे,
मचा रहे हैं मोहक शोर.

बाग-बगीचे चहक उठे सब,
कलियाँ खिल गईं निद्रा छोड़.

चहल-पहल हुई गलियाँ सारी,
बच्चे मचा रहे धूम चारों ओर.

*****

शिक्षा और अशिक्षा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

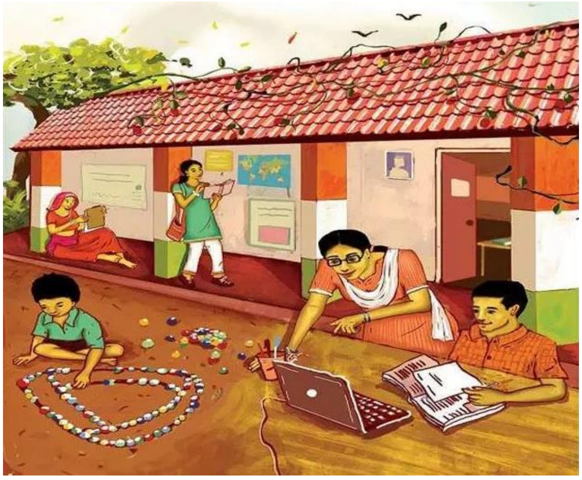

नाटक के पात्र:-

1) बूढ़ी महिला (दादी)
2) राधा
3) ग्राम सचिव
4) बैंक एजेंट

(पहला दृश्य- घर और सचिव)

(दादी, दादी की आवाज होती है एक कमरे से बूढ़ी महिला निकलती है और दूसरे कमरे से एक ग्यारह साल की लड़की)

बूढ़ी महिला (दादी): क्या बात है राधा, क्यों चिल्ला रही हो?

राधा: मेरा कपड़ा फटा हुआ है.

सुई धागे से सी लो.

राधा: मुझे नहीं सीनी, मुझे नई ला कर दो.

दादी:इस महीने वृद्धावस्था का पेंशन जमा हो जाएगा तब नए कपड़े खरीदूंगी.

राधा: हर महिने ऐसे ही कहती हो, लेकिन लाती नहीं हो.

दादी: इस महीना पक्का लाऊंगी.

(ग्राम सचिव का प्रवेश)

सचिव: दादी, दादी.

दादी:राधा, जाकर देखो बाहर कौन आया है?

राधा: सचिव है दादी.

दादी: सती?

राधा: नहीं दादी सचिव हैं.आप तो सचिव को सती कहती हो और झिल्ली को झिन्नी.

दादी: मेरी बेटी सती आ गई. उनके लिए पानी ले आओ. बहुत दिनों के बाद मायके आई है.

राधा: यह तुम्हारी बेटी सती नहीं है. यह गांव का सचिव है जो तुम्हें पेंशन देता है.

दादी:राधा, कुर्सी ले आओ बैठने के लिए.

सचिव: कैसी हो दादी?तबीयत तो ठीक है ना.

दादी: अब मैं वृद्ध हो गई हूं. ना तो ठीक से बोल पाती हूं और ना ही सुन पाती हूं.

सचिव: राधा तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?

राधा: मैं रोज स्कूल जाती हूं. शिक्षक लोग सभी विषयों को पढ़ाते हैं और होमवर्क भी देते हैं.मैं मन लगाकर पढ़ती हूँ.

दादी: पेंशन जमा हो गया क्या बेटा?

सचिव: आपका पेंशन बैंक में जमा हो गया है आप जाकर निकाल लेना.

(इतना कह कर सचिव चला जाता है)

(दूसरा दृश्य- दादी,राधा और बैंक एजेंट)

(दादी और राधा बैंक जाते हैं लेकिन दादी को फार्म भरना नहीं आता, वह एजेंट को फार्म भरने के लिए कहती है)

दादी: साहब! इस फार्म को भर दीजिए.

एजेंट: मैं फॉर्म भरूंगा लेकिन कमीशन लूंगा. पचास रुपया मुझे देना.

दादी:ठीक है.

राधा: रुको दादी. हम पचास रुपया उसे क्यों देंगे?

दादी:मैं अनपढ़ हूं बेटी. मुझे फार्म भरना नहीं आता. वह फार्म भर रहा है इसलिए हम लोग उनको पैसा देंगे.

राधा: मुझे आहरण फार्म भरना आता है.

दादी: सच में बेटी. कहां से सीखी?

राधा: कक्षा पांचवी में पर्यावरण विषय में बैंक पाठ है. जिसमें शिक्षक हमें चेक, जमा पर्ची और आहरण पर्ची भरना सिखाए हैं.

(राधा एजेंट से फार्म को वापस मांग लेती है)

एजेंट- हर महीने मैं ही फार्म भरता था दादी. इस महीने नहीं भरवा रही हो. मैं भी देखता हूं तुम्हारी राधा फार्म भर पाती है या नहीं.

राधा: मैं फार्म भर लूंगी दादी. आप चिंता मत करो.

दादी: तुम तो बहुत होशियार हो बेटी. मेरे माता-पिता मुझे पढ़ाना चाहते थे लेकिन मैं ही नहीं पढ़ पाई. तुम पढ़ लिख कर हमारे कुल का नाम रोशन करोगी.

राधा: फार्म भर गया दादी. इसमें अपना अंगूठा लगा दो.

दादी: राधा,आज तुमने हमारे पचास रुपए बचा लिए.तुम पढ़ी-लिखी नहीं होती तो एजेंट को हमें पचास रुपए देने पड़ते .तुम्हें मैं ए.बी.सी.डी. पढ़ाऊंगी और ऑफिसर बनाऊंगी.

राधा: ठीक है दादी, लेकिन ए.बी.सी.डी. नहीं कहते बी.ए. एम.ए. कहते हैं.

दादी: मुझे बोलने के लिए नहीं आता. जबान लड़खड़ा जाता है. मैं फार्म को बैंक में जमा कर पैसा लेकर आती हूं.

राधा: जल्दी आना दादी.

(कुछ समय बाद दादी बैंक से बाहर निकलती है)

दादी: पेंशन का पैसा मिल गया बेटी, चलो तुम्हारे लिए कपड़े खरीदती हूं.

(दादी और राधा दोनों कपड़े खरीदने दुकान की ओर चल पड़ते हैं.)

*****

पिता का साया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

जीवन में पिता का साया
सुकून भरी छाया.
पिता से है जो प्यार पाया
जीवन में आनन्द समाया.

पिता हैं बच्चों का साया
जो बुरी नजरों से बचाया.
जिसने प्यार सदा लुटाया
तभी पिता वो कहलाया.

पिता ने गिरने से बचाया
अपने को बैसाखी बनाया.
पिता ने चलना सिखाया
गिरते हुए हृदय से लगाया.

पिता ने मुझे खड़ा कराया
मंजिल का राह दिखाया.
पिता ने कष्टों को भगाया
मेरे बोझ कंधों से उठाया.

*****

संस्कार चाहिए

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

घटती घटनाएँ कहतीं हैं, मानवता धर्म शर्मसार हो चुकी.
मानवता के पुजारी अब तो आओ, धरा बेजार हो चुकी.

कफन का टुकड़ा भी नसीब नहीं हो रहा है देखो मधुर.
दो गज जमीन नसीब नहीं, धूमिल सारे संस्कार हो चुके.

बंद बोतलों में पानी, अब तो सासें भी बिकने लगी हैं.
लगता है प्रकृति से बहुत ही ज्यादा खिलवाड़ हो चुका.

कटती धरती वीरान पड़ी है,जिससे गली सुनसान पड़ी है.
अब भी सुधर जाओ मधुर,धरती अब बेजार हो चुकी.

चंद रुपयों खातिर जिंदगी दाँव पर, इंसानियत शर्मसार है.
बहुत कमाया जिंदगी में पैसे, लेकिन सब बेकार हो चुका.

बीमारी के नाम पर देखो कितनी हो रही है कालाबाजारी.
भूख से मर रहे हैं लोग, अब इंसानियत तार-तार हो चुकी.

दो- दो हाथ मिल बढ़ो सभी, चरामेति सा संस्कार चाहिए.
अब तो अवतार लो प्रभु, मनुज का जीवन खार हो चुका.

*****

बुरे दौर को भूल जाते हैं

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

गुजरे बुरे दौर को अब भूल जाते हैं.
आओ मिलकर नया भारत बनाते हैं.
चलो मिलकर नया भारत बनाते हैं.

उम्मीदों के फूल सँजोकर, भविष्य नया बनाते हैं.
नवनिर्माण हो रहा भारत का, साहस के पंख लगाते हैं.
हौसलों के नींव खोदकर, मन का तमस मिटाते हैं.
युवाओं का सुंदर भारत, प्रेरणा का दीप जलाते हैं.

काट के धरती किये वीरान, चलो वृक्ष लगाते हैं.
साँसों का मोल पता चला, अब तो सुधर जाते हैं.
सूख न जाये अपनी धरती, उसका श्रृंगार कराते हैं.
बंजर हो गई धरती अपनी, मिलकर वृक्ष लगाते हैं.

जो हार गए हैं मन से, उन्हें भला चंगा बनाते हैं.
सड़े हुए पानी को, निर्मल पावन गंगा बनाते हैं.
बिछड़े हुए हैं कितने यहाँ, उन्हें राह दिखाते हैं.
जो गलती हुई है हमसे, उसे सुधार लाते हैं.

घर कर गया है मन में, उस डर को मिलकर भगाते हैं.
भयमुक्त हो भारत सारा, उम्मीदों की किरण जगाते हैं.
गर खो गया है साहस मन का, उसे ढाँढस बँधाते हैं.
भयभीत हुआ है मन तो मधुर, प्रेम सौहार्द्र फैलाते हैं.

*****

बालिका शिक्षा की लौ

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सब कहते हैं,
पर कोई उचित कदम क्यों उठाता नहीं.
अज्ञान के अंधकार में आज भी है बेटी,
बालिका शिक्षा की लौ क्यों जलाता नहीं?

कभी कभी ही खिलती, कली फूल सी बहार बेटी.
घर की आन बान शान, दो कुलों की संस्कार बेटी.
पढ़ना लिखना आगे बढ़ना, है तेरा अधिकार बेटी.
माने बेटी को घर आँगन की दीपमाला, पर ज्ञान देकर उसे कोई क्यों जलाता नहीं?

गर्भ में मार देते हैं, पाँव जमीं पर भी न पड़ने देते.
अज्ञानता की जंजीर से बाँध, उसे न आगे बढ़ने देते.
बेटे को पढ़ाते हो, पर बेटी को क्यों न आगे पढ़ने देते.
बेटा-बेटी के भेद को मिटाकर, मधुर समभाव का दीप कोई क्यों जलाता नहीं?

घर में माँ बहन पत्नी चाहिए, ये भी तो एक नारी है.
तो फिर क्यों कहते हो मधुर, बेटी बोझ एक बीमारी है.
ज्ञान का प्रकाश दो बेटी को भी, शिक्षा दुनिया सारी है.
आज भी बेटी को चूल्हा चौका में बाँध, बेटों सा अधिकार कोई क्यों दिलाता नहीं?

*****

होली

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

हर इंसान अपने रंग में रंगा हो,
तो,समझ लेना होली है.
हर रंग कुछ कहता ही है,
हर रिश्ते में हँसी ठिठोली है.

जीवन रंग महकाती,
आनंद उमंग उल्लास से.
जीवन महक उठता है,
एक दूसरे के विश्वास से.

प्रकृति की हरियाली,
मधुमास की राग है.
नवकोपलों से लगता,
कोई लिया वैराग्य है.

हर गिले शिकवे को मिटा दो,
फैलाओ ये प्रेम रूप झोली है.
हर इंसान अपने रंग में रंगा हो,
तो,समझ लेना होली है.

आग से राग तक,
राग से वैराग्य तक.
चलता रहे यूँ ही,
परंपरा ये फाग तक.

होलिका दहन की आस्था,
युगों-युगों से चली आ रही.
आग में चलना,राग में गाना,
प्रेम की गंगा जो बही.

परंपरा ये अनूठी, होती कितनी,
हर किसी से हँसी ठिठोली है.
हर इंसान अपने रंग में रंगा हो,
तो समझ लेना होली है.

*****

होली तिहार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

आवय महीना फाग के, खेले रंग गुलाल.
पीला नीला अउ हरा, रंगे सब के गाल.
रंगे सब के गाल, खुशी से नाचय झूमय.
दाई बाबू देख, अपन नाती ला चूमय.
ढोल नगाड़ा संग, अबड़ सब गाना गावय.
रहय सुघर परिवार, फाग होली जब आवय.

लइका मन हर आज के, नइ खेलय अब रंग.
गोली देखय भाँग के, रहिथे जम्मो दंग.
रहिथे जम्मो दंग, देख के मुहूँ बनाथे.
कोनो रंग लगाय, अबड़ ओला चिल्लाथे.
बइठे कुरिया लोग, लगाके जी वो फइका.
बदल जमाना देख, नहीं खेलय अब लइका.

मोबाइल मा आज कल, मानय सबो तिहार.
भेजय होली रंग ला, खुश होवय परिवार.
खुश होवय परिवार, उही मा देत बधाई.
बाँटय मया दुलार, सबो झन बहिनी भाई.
लइका मन ला देख, करय सब बड़ इस्माइल.
कइसे कलयुग आय, रंग बाँटे मोबाइल.

*****

तितली रानी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

तितली-रानी, तितली-रानी,
तुम लगती हो बड़ी सुहानी.

बन के बागों की तू महारानी,
फूलों पर करती है मनमानी.

रंग-रंगीले तेरे पंख तुम्हारे,
लगते हैं कोमल प्यारे-प्यारे.

तू उड़ती है सदा पंख-पसारे,
तब लगते पंख न्यारे-न्यारे.

खिले फूल हैं तुमको भाती,
जाकर फूलों से नेह लगाती.

चुपके-चुपके कुछ कह जाती,
और दूर-दूर फिर उड़ जाती.

*****

मेले में मौज

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर "रवि"

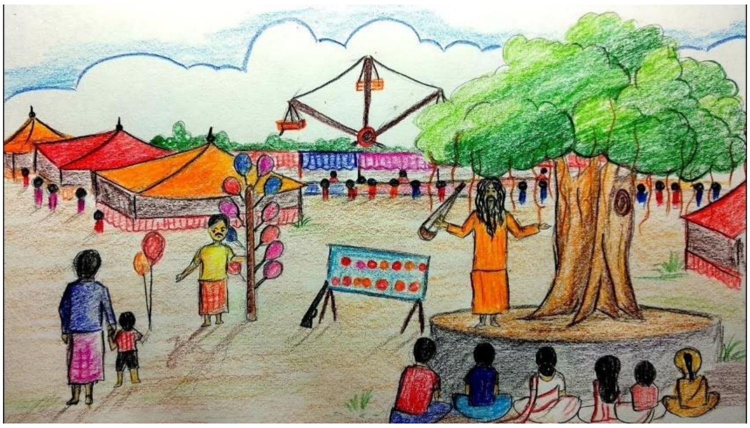

मम्मी-पापा, दादा-दादी के संग,
नए-नए कपड़े पहनकर.

मेला घूमने जाएंगे,
झूले का मजा उठाएंगे.

गुब्बारे को हाथों में लेकर,
हवा में लहराएंगे.

लड्डू, जलेबी, बतासे,
चाट, समोसे, रसमलाई भी खाएंगे.

कार, झुनझुना, ट्रक, बस,
सब खेल-खिलौने लेकर आएंगे.

*****

चीटा भागा घोड़ा सा

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव

चीटा जी के पंजे धंस गए,
चिपक गए तो गुड़ में फंस गए.
उनको देखे भाले कौन,
बाहर उन्हें निकाले कौन.

तभी अचानक आ गई धूप,
कड़े दिखाए तेवर खूब.
पिघल गया गुड़ थोड़ा सा,
चीटा भागा घोड़ा सा.

*****

टॉपर बनने के लिए फोर्स

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

जी अगर आप अपने बच्चे को, टॉपर बनने के लिए फोर्स करते हैं, उनको बार-बार डांटते हैं, फटकारते है, तो मत कीजिए! जरूरी यह है, की उन्हें अपनापन मिले, साथ ही साथ में प्यार मिले, उन्हें कैरियर के साथ-साथ, अपनों की अहमियत भी समझाइए, ऐसा ना हो कि जब वह बड़े हो जाए, उनके लिए सबसे ज्यादा जरूरी, सिर्फ अपना कैरियर ही रह जाए!

जब वह बड़े हो जाते हैं, हमारी अपेक्षा रहती है कि हमारे बच्चे हमारे साथ बैठे, हमारे साथ कुछ वक्त बिताए, पर सोचिए, जब वह छोटे थे, आप निरंतर अपने कार्यों में व्यस्त थे और उन्हीं भी आपने समय ना देते हुए, कोचिंग क्लासेस, ट्यूशन, स्कूल और बहुत सी एक्टिविटीज मैं व्यस्त कर दिया!

उनकी आदत आपने स्वयं बना दी, अब जब बड़े हो गए तो जो वह सीखें उन्होंने भी वैसा ही व्यक्तित्व एवं व्यस्तता का निर्माण किया. अब हम अपेक्षा करें कि वे हमारे साथ कुछ बातें करें व थोड़ा समय बिताए तो क्या यह सही है?

जब आप वृद्ध हो जाते हैं, जितनी आपको जरूरत होती है कि आपके साथ कोई समय बिताए वैसे ही छोटे बच्चों को भी आवश्यकता होती है उनके माता-पिता उनके साथ समय बिताए.कोशिश कीजिए, जब आपको आपके बच्चे अपनी स्कूल की किताबों की कहानी सुनाएं तो आप सुने, कभी आप उन्हें कहानी सुनाएं.कभी कुछ एक्टिविटीज घर में करिए.साथ में मिलकर प्रोजेक्ट बनाएं.कभी-कभी साथ में खेले .कोशिश कीजिए बहुत से कार्य को खेल-खेल में, हंसी खुशी, एक वक्त साथ में बिताते हुए उनको बड़ा करें.

जीवन में धन, कैरीअर, शिक्षा के साथ-साथ, अपनों का साथ भी जरूरी होता है. अगर आप उनको टॉपर बनने के लिए फोर्स करते हैं तो हो सकता है उनके अंदर की कोई कला, रुचि, या बहुत से विचार है जो शायद हार जाएंगे! उनका साथ दीजिए, उन्हें कहिए हमें अच्छे अंक लाने हैं, कोशिश करनी है, जरूरी नहीं कि टॉप ही करें, पर हारना नहीं है और अगर हार भी गए तो मैं तुम्हारे साथ हूं, यह विश्वास दीजिए.बहुत से बच्चे इसी डिप्रेशन और इस प्रेशर में आकर कभी-कभी आत्महत्या तक कर लेते हैं.

टॉपर बनने की आदत और कभी ना हारने की आदत बहुत कुछ छीन लेती है. जीवन में हम हर चीज में टॉपर हो ही नहीं सकते.कहीं ना कहीं हमें हार और जीत अवश्य मिलती है.पर अगर मन हारा तो सब हारा.हमारा मानसिक संतुलन, मानसिक विकास, स्वास्थ्य आदि पर इसका बहुत प्रभाव पड़ता है.

हमें बच्चों की खुशी का ध्यान रखना, अत्यंत आवश्यक है, स्वयं के लिए, समाज के लिए, उनके खुद के लिए.कई बार बच्चे पढ़ाई में तो अच्छे होते हैं पर स्पोर्ट्स में उनकी बिल्कुल रुचि नहीं होती.अपनों के साथ बैठकर दो बातें करने में उन्हें तकलीफ होने लगती है.इन सभी का कारण है कि वह सिर्फ एक ही कार्य में पूरी तरह से व्यस्त है.

जीवन में संतुलन होना अत्यंत आवश्यक है, देखिए कहीं उनका स्वास्थ्य तो नहीं नजरअंदाज हो रहा है. नजरअंदाज होने से यह तात्पर्य है कहीं उनकी शारीरिक गतिविधियां तो नहीं कम हो रही है.मानसिक विकास के साथ-साथ, शारीरिक विकास होना अत्यंत आवश्यक है और वह शारीरिक गतिविधियों से ही होती है ना कि पूरे दिन चारदीवारी में बैठकर किताबें पढ़ने से.अगर उनके बचपन में शारीरिक गतिविधियों में थोड़ी भी रुचि नहीं आई तो बड़े होकर वह मोटापा, डायबिटीज बहुत सी बीमारियों से जूझते रहेंगे.

हफ्ते में, या रात को सोते वक्त कुछ समय जरूर ऐसा निकाले, जिसमें आप वह सब सुने, जो आपको वह बताना चाहते हो.याद रखिए, बहुत सी बातें, सिर्फ बच्चे अपने माता-पिता को ही बता सकते हैं और अगर आप उनको समय नहीं देते तो वह जिंदगी भर जूझते रहेंगे.

हम सभी के पास आज भी, बहुत से दोस्तों की बातें आती है कि मेरे साथ बचपन में यह हुआ था जिससे मैं आज तक उस तकलीफ में हूं! अगर बचपन में वह अपने माता पिता को बता देते तो सोचिए और ज्यादा विकास कर सकते थे.

हमने बहुत ही बार देखा है, जो बच्चे टॉपर होते हैं, उनमें से बहुत से बच्चे आने वाले वक्त में एक साधारण जीवन बिता रहे होते हैं, पर वही जब आप देखेंगे जो बच्चे एवरेज मार्क्स लाते हैं, वह बड़े होकर कुछ ऐसा कर जाते हैं, कि हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं.

इसका पूरा पूरा श्रेय, उन माता-पिता को जाता है, जिन्होंने उन पर विश्वास किया, उनके साथ वक्त बिताया, उनकी काबिलियत को समझा और यही कार्य कभी-कभी शिक्षक भी कर जाते हैं, उनके साथ वक्त बिता कर, उनकी काबिलियत को समझ कर, उन्हें सही रहा, मानसिक तनाव से मुक्त कर और अच्छी सलाह देते हैं.

आज टॉपर बनने के चक्कर में, अपनी पढ़ाई में ही नहीं, जो आदत उन्हें बचपन से मिली, तो बड़े होकर करियर में टॉपर बनने की भी इच्छा है.अब इनका मानसिक व्यक्तित्व बस इन्हें टॉपर बनने की सलाह देता है, चाहे उसके लिए कुछ भी करना पड़े, क्राइम, करप्शन, चापलूसी, बहुत ज्यादा कंप्रोमाइज , मानसिक तनाव लेना, अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज करना, इत्यादि.

मानसिक स्वास्थ्य सबसे टॉप पर,
शारीरिक स्वास्थ्य हो प्रॉपर,
जीवन में संतुलन है अत्यंत जरूरी
किसी भी पल में हो न मजबूरी.

*****

मुर्गा बोले कूंकडूं- कूं

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

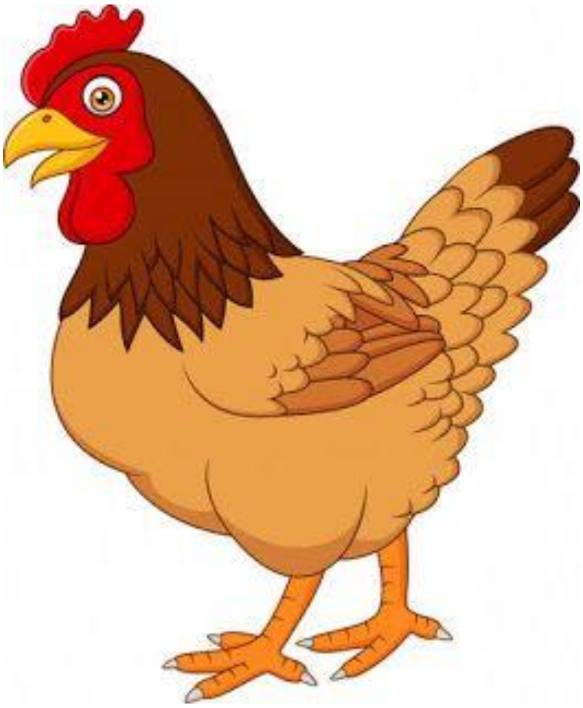

मुर्गा बोला कूंकडूं- कूं,
चल मुनिया अब उठ जा तू.

उठकर चल तू फ्रेश हो जा,
फ्रेश होकर तू खाना खा.

जल्दी से अब तैयार हो जा,
तैयार होकर तू बस्ता उठा.

बस्ता लेकर अब स्कूल जा,
स्कूल जाकर चल कलम उठा.

कलम उठाकर लिखना सीख,
लिखना सीख, तू पढ़ना सीख.

पढ़कर आगे बढ़ना सीख,
मुसीबतों से लड़ना सीख.

मिड डे मील में खाना खा,
खाना खाकर गाना गा.

*****

जीतने की कोशिश मैं करता रहूंगा

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे

आज भले ही कमजोर हूँ,
कोसो मंजिल से दूर हूँ.
फिर रोक न सकोगे मुझको,
सपनों में हरदम मैं भरता रहूंगा.
जीतने की कोशिश मैं करता रहूंगा.

आज का दिन बीत गया,
कल नया सूर्योदय होगा.
आज भले मैं थका हारा,
कल नया जीवनोदय होगा.
एक नया विश्वास मैं भरता रहूंगा.
जीतने की कोशिश मैं करता रहूंगा.

हारा हूँ, पर थका नहीं हूँ,
डगमगाया, पर गिरा नहीं हूं.
बुलन्द हौसलें, मजबूत इरादे,
जब तक सांसे है, मैं लड़ता रहूंगा.
जीतने की कोशिश मैं करता रहूंगा.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

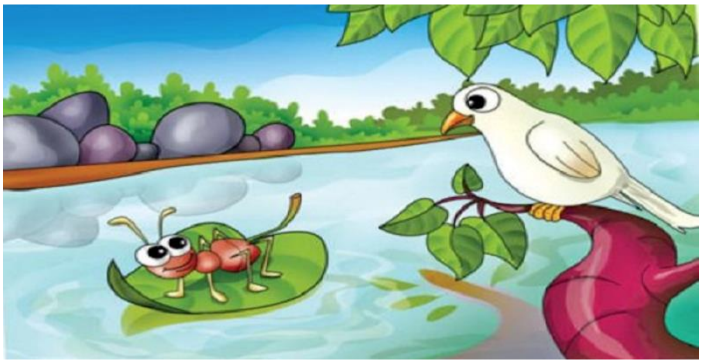

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी

चींटी और कबूतर

गर्मी के दिनों में एक चींटी बहुत प्यासी थी, पानी की खोज में इधर से उधर भटकते हुए वह एक नदी किनारे पहुँची.

वह सोचने लगी कि पानी किस तरह पिये, क्योंकि चींटी सीधे नदी से पानी नहीं पी सकती थी. चींटी को एक उपाय सूझा, वह एक छोटे पत्थर पर चढ़ गई और पानी पीने की कोशिश करने लगी परंतु उसकी यह योजना विफल रही और वह नदी में गिर गई.

नदी के किनारे एक पेड़ था जिसमें एक कबूतर रहता था. वह कबूतर दयालु और अच्छे स्वभाव वाला था, उसने चींटी को नदी में बहते हुए देखा तो पेड़ से एक पत्ता तोड़कर चींटी के पास फेंक दिया.

चींटी कबूतर द्वारा फेंके गए पत्ते पर चढ़ गई. वह पत्ता थोड़ी दूर जाकर नदी के किनारे पहुँच गया, चींटी जमीन पर आ गई और उसकी जान बच गई.

कुछ दिनों पश्चात एक शिकारी ने कबूतर को पकड़ने के लिए उस पेड़ के निकट दाने डाल कर जाल बिछा दिया और खुद दूसरे पेड़ के पीछे छुप गया.

कबूतर की दृष्टि दानों पर पड़ी, वह दाना चुगने नीचे आया और जाल में फँस गया.

जिस चींटी की कबूतर ने जान बचाई थी, वह भी यह दृश्य देख रही थी. कबूतर को फँसा देख उसे बचाने का उपाय सोचने लगी. चींटी को एक उपाय सूझा और जैसे ही शिकारी जाल पकड़कर चलने लगा वैसे ही चींटी ने वहां पहुँचकर शिकारी के पैर पर जोर से काटा.

चींटी के काटने के कारण शिकारी ने अपने हाथ से जाल छोड़ दिया और अपने पाँव की तरफ देखने लगा. जाल के छूटते ही कबूतर मौके का फायदा उठाते हुए तेजी से आसमान की ओर उड़ गया.

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा 10 वीं, शा. कन्या हाईस्कूल रतनपुर, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

कबूतर और चींटी की दोस्ती

नदी किनारे एक पेड़ था. उस पेड़ के नीचे एक चींटी रहा करती थी. पेड़ के ऊपर एक घोंसले में एक कबूतर भी रहा करता था.

एक दिन चींटी, पानी पीने, नदी की ओर गई. नदी के तेज बहाव में चींटी डूबने लगी. तभी कबूतर की नजर चींटी पर गई.

कबूतर ने पेड़ से एक पत्ता तोड़कर नदी में गिराया. चींटी ने पत्ते पर चढ़ कर अपनी जान बचा ली.

चींटी कबूतर को धन्यवाद कहना चाहती थी लेकिन उसे कबूतर मिलता ही नहीं था. कुछ समय बीता.

एक दिन एक शिकारी उस पेड़ के पास आया. शिकारी धनुष से कबूतर पर निशाना लगाने वाला था तभी शिकारी को चींटी ने देख लिया.

चींटी जल्दी से शिकारी के पास गई और शिकारी के पैर पर काट लिया. चींटी के काटने से शिकारी का निशाना चूक गया.

तीर कबूतर को न लगकर पेड़ की एक डाल को जा लगा. कबूतर जल्दी से वहाँ से उड़ गया. इधर चींटी अपने बिल में घुस गई.

कुछ दिनों बाद कबूतर चींटी से मिला और चींटी को धन्यवाद कहा. इसके बाद वह अच्छे दोस्त बन गए.

नितिन राघव द्वारा भेजी गई कहानी

चींटी और कबूतर की प्रतियोगिता

एक जंगल में बहुत बड़ा और गहरा तालाब था, जिसके चारों ओर रंग बिरंगे फूलों के छोटे छोटे पौधे थे, जिनके कारण तालाब बहुत ही खूबसूरत लगता था. तालाब के किनारे एक पेड़ था पेड़ पर एक सफेद कबूतर बैठा था. उसकी नज़र तालाब में पत्ते पर बैठकर तैरती हुई चींटी पर पड़ी. चींटी बडे मजे से तालाब में तैर रही थी. कबूतर बोला, " मैं भी तुम्हारे साथ तैरना चाहता हूँ." चींटी बोली कि मैं इसमें पहले से तैर रही हूँ इसलिए सिर्फ मैं ही तैर सकती हूँ, कोई और नहीं. दोनों इस बात पर झगड़ने लगे. एक बूढी मछली बोली, " तुम दोनों झगड़ क्यों रहे हो?" दोनों अपने बीच एक प्रतियोगिता रख लो जो इस तालाब के चार चक्कर पहले लगा देगा, वही तालाब में तैर सकता है. कबूतर और चींटी तैयार हो गये. कबूतर ने पेड़ से एक पत्ता तोड़कर तालाब में फेंका और उस पर बैठ गया. प्रतियोगिता शुरू हुई. जब दोनों पहला चक्कर लगा रहे थे तो चींटी ने मगरमच्छ को देखकर कहा, "मैंने सुना है कि कबूतर खाने में बहुत स्वादिष्ट होते हैं." इतना सुनकर मगरमच्छ के मुँह में पानी आ गया और वह पानी में छिपकर कबूतर को खाने का मौका देखने लगा. इधर कबूतर मेंढक से कह रहा था, "मैंने सुना है कि चींटियाँ खाने में बहुत स्वादिष्ट होती हैं." उसकी बात सुनकर मेंढक का भी मन ललचाने लगा और वो भी पानी में छिपकर चींटी को खाने की सोचने लगा.

प्रतियोगिता का चौथा चक्कर चल रहा था तभी मौका पाकर मगरमच्छ ने कबूतर को खा लिया. ये देखकर चींटी बहुत खुश हुई. वह जीत की खुशी में पत्ते पर ही नाचने लगी परन्तु उसकी यह खुशी ज्यादा देर तक नहीं चली क्योंकि कुछ ही देर में मेंढक ने चुपके से आकर उसे खा लिया.

इस प्रतियोगिता में न तो चींटी जीती और न ही कबूतर परन्तु उन दोनों ने मृत्यु को जिता दिया.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

सच्ची मित्रता

एक तालाब के किनारे वृक्ष पर कबूतर रहता था.उसी पेड़ के नीचे चींटी का बिल था. दोनों सुबह होते ही अपने-अपने भोजन की तलाश में निकल कर भोजन की व्यवस्था करता,भोजन करके के पश्चात वहाँ आराम से बैठकर अपना-अपना हाल-चाल सुनाता.दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई.दोनों खुशी से अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे.

एक दिन एक शिकारी आया और पेड़ के नीचे छुप गया. वह अपनी गुलेल से आराम कर रहे कबूतर को निशाना लगाने लगा.उसे देख कर चींटी ने सोचा- आज मेरे दोस्त कबूतर को यह शिकारी मार ही डालेगा.मुझे कुछ करना चाहिए कहते हुए,शिकारी के पैर को जोर से काटा.जैसे ही चींटी शिकारी के पैर को काटा शिकारी का निशाना चुक गया और कबूतर उड़ गया. शिकारी के पैर पर चींटी को बैठे देखकर कबूतर समझ गया कि मेरे दोस्त चींटी के वजह से ही मेरी जान बचा है.उसे हृदय से धन्यवाद दिया.

कुछ दिन पश्चात पेड़ पर कबूतर और चींटी बैठकर आराम कर रहे थे तभी अचानक तेज आंधी-तूफान आई.कबूतर ने आंधी-तूफान से किसी भी तरह अपनी जान बचाई पर चींटी तेज हवा को सहन ना कर सकी और वह नीचे तालाब में गिर गई. घबराकर उसने आवाज दी -बचाओ, मुझे कोई बचाओ--- तभी कबूतर ने उसे देखा. ये क्या, मेरा दोस्त ही पानी में डूब रही है.कबूतर ने उसे कहा-घबराओ नहीं दोस्त,मैं कुछ उपाय करता हूँ.कहकर पेड़ से एक पत्ता तोड़ा और उसके किनारे नीचे गिरा दिया. चींटी उस पर चढ़ गया. कबूतर सावधानी पूर्वक उस पत्ता को अपनी चोंच में पकड़कर पेड़ के पास आ पहुँचा.इस तरह चींटी की जान बच गई.चींटी ने अपने दोस्त कबूतर को से धन्यवाद दिया.

तब कबूतर ने कहा- विपत्ति के समय पर जो काम आता है वही सच्चा मित्र होता है.तभी तो लोग कहते हैं- "कर भला तो हो भला."कहते हुए दोनों खुशी से अपना जीवन व्यतीत करने लगे.

अनन्या तंबोली, कक्षा छठवीं द्वारा भेजी गई कहानी

एक चींटी थी वो नदी के किनारे घूम रही थी उसे नदी में एक पत्ता दिखा चींटी उस पत्ते पर बैठ गई. और सोचने लगी अगर इसे मैं नाव बना कर नदी के चारो तरफ घूमूँ तो कितना अच्छा होगा मैंने कभी नाव की सवारी नहीं की है. पत्ते को ही नाव बना कर चारों तरफ घूम लेती हूं लेकिन डूब गई तो क्या होगा यह भी सोच रही थी और वह अपनी सहायता के लिए कबूतर को तैयार करके रखी थी यदि मैं डूबने लगी तो उड़ कर मुझे बचा लेना कहकर वह नदी के सैर पर निकल पड़ी.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

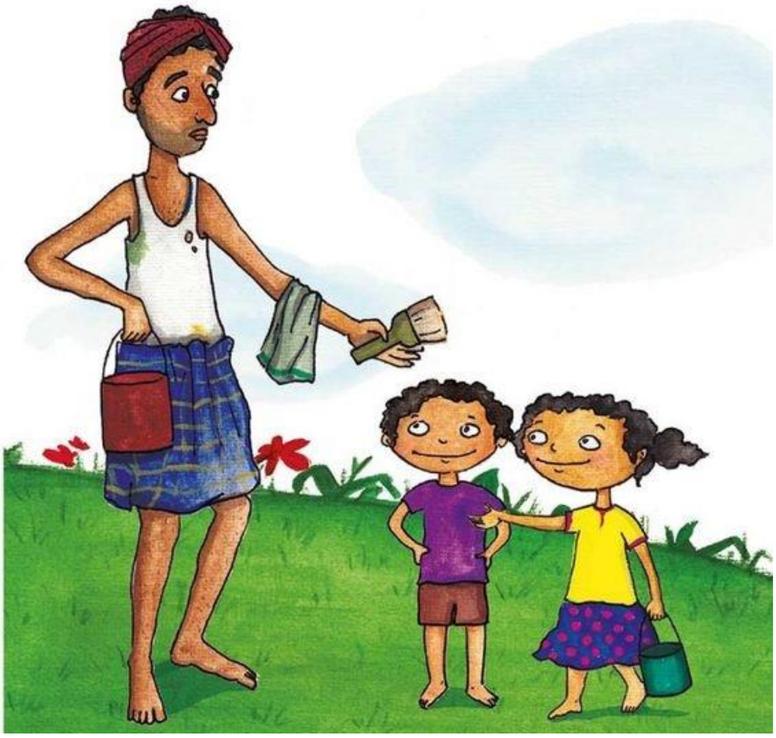

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।